BUSH BEANS PACKAGE OF PRACTICES

Congratulations! You have chosen one of the finest Bush Beans seeds from the Crystal family. Crystal has solid experience in producing high-quality Bush Beans seeds. These seeds are the result of extensive research, aimed at developing high-yielding hybrid crops suitable for diverse agricultural climates. Crystal adopts the latest technologies during seed production to ensure that farmers receive seeds of the highest quality. Crystal's Bush Beans seeds provide excellent germination & better Vigor with tolerance to biotic & abiotic stresses.

Kindly adopt the best farming practices to get outstanding yield. The following general recommendations are provided, so we kindly ask you to read these recommendations before making any decisions.

Bush Beans Hybrid	**kusuma, Lalita**
Duration	100-110 days
Kharif	Yes
Rabi	Yes
Spring	Yes
Source of Irrigation	canal/ Borewell

Please note according to weather conditions crop growth & maturity may be different

S. No.	Particulars/ operations/Practice	Details of operation. input per acre
1	Suitability of the area/Agro-climatic zone	Bush beans can be grown in India year-round, but they perform well under moderate weather, so sowing in monsoon (July-August), winter (October-November), and early summer (February-March) depending on the region.
2	Land / Soil	Well drained loamy soils with pH range of 5.5-6.0 is required. The optimum temperature is 15-24°C.
3	Season. Sowing/planting time	Hills: February –March, Plains: October- November
4	Seed rate. Sowing/planting method.	Seed rate: About 80 kg/ha for hills and 50 kg/ha for plains are required.
5	Preparation of Main field and planting	Hills: Dig the soil thoroughly and incorporate FYM and form beds of convenient size. Plains: After two ploughing, form ridges and furrows.
6	Spacing	In Hills, sow the seeds (2 seeds/hill) in lines or in beds at a spacing of 30 x 15 cm. In plains, sow the seeds (2 seeds/hill) in the sides of the ridges at a spacing of 45 x 30 cm.
7	Seed treatment before sowing	Treat the seeds with Trichoderma 4 g/kg of seed 24 hours before sowing to control fungal diseases.
8	Manures and Fertilizers	Apply FYM 25 t/ha at the last ploughing. N at 90 and P at 125 kg/ha should be applied on one side of the ridges
9	Irrigation schedule	immediately after sowing, third day and thereafter once a week.
10	Weeding/ inter-cultivation	20 – 25 days and 40 – 45 days after sowing. The crop should be earthed up after each weeding.
11	Micronutrient/growth regulator sprays	
12	Pest and Disease control	Thrips /Aphids : Flonicamid 50 % WG (0.5 gm/litre) or Flubendiamide 8.33 % + Deltamethrin 5.56 % w/w SC (0.5 ml/liter) Whitefly: Imidacloprid 30.5% SC (0.5 ml/litre) Pod borer: Emamectin Benzoate 5% SG (0.5 gm/litre) or Chlorantraniliprole 18.5% w/w (0.5ml/liter) Mosaic: Remove the affected plants and spray Imidacloprid 30.5% SC (0.5 ml/litre) to control the vector Powdery mildew: Tebuconazole 50% + Trifloxystrobin 25% WG (0.5 to 1 gm per litre) Anthracnose: Remove the affected plants and pods and spray with Tebuconazole 38.39% w/w SC (1.25 ml per liter). For more information to control & disease in field, please consult your local agriculture officers.
13	Harvest	Pods will be ready for harvest in 60-75 DAS. Pods should be firm and tender to harvest, and harvest once in every 2 to 4 days. Avoid harvesting wet pods.
14	Expected yield/ acre	Green pods 12 - 15 t/ha in 90 to 110 days under ideal conditions.
15	Storage	Beans for fresh purposes are highly perishable. Refrigeration after harvest can extend the shelf life
16	Don't Do	
17	Do's	
Note	The above information is a general advisory. For specific recommendations related to particular region, please contact your local State Agriculture Department.	
Precautions	Crop growth and yield can be affected by various factors. Therefore, it is recommended to consult your local agricultural officer for advice. Ensure that only high-quality fertilizers and pesticides are used. Retain the bills for the purchase of seeds, fertilizers, and pesticides.	

CRYSTAL
Inspiring Growth

I&B Seeds
INDUS SEEDS | SEED PLANT SCIENCE

बुश बीन्स की खेती का तरीका

बधाई हो! आपने क्रिस्टल परिवार की बेहतरीन बुश बीन्स किस्मों में से एक को चुना है। क्रिस्टल कंपनी को उच्च दर्जे के बुश बीन्स के बीजों के उत्पादन का व्यापक अनुभव है। ये बीज व्यापक शोध के फलस्वरूप तैयार किए गए हैं, ताकि अलग-अलग खेती की परिस्थितियों में अधिक उपज देने वाली हाइब्रिड फसलें विकसित की जा सकें। क्रिस्टल कंपनी बीज निर्माण में आधुनिक तकनीकों का उपयोग करती है, जिससे किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीज मिल सकें। क्रिस्टल के बुश बीन्स बीजों में उच्च अंकुरण क्षमता, मजबूत पौध वृद्धि और रोग और पर्यावरणीय तनावों के प्रति अच्छी सहनशीलता देते हैं।
बेहतरीन परिणाम प्राप्त करने हेतु खेती के अनुशंसित तरीकों को अपनाएँ। आगे कुछ सामान्य सुझाव दिए जा रहे हैं, इसलिए हम आपसे विनम्रतापूर्वक अनुरोध करते हैं कि फैसला लेने से पहले कृपया इन्हें अच्छी तरह पढ़ लें।

हाइब्रिड बुश बीन्स	कुसुमा, ललिता											
अवधि	100-110 दिन											
खरीफ	हाँ											
रबी	हाँ											
वसंत	हाँ											
सिंचाई का स्रोत	नहर/ बोरवेल											

कृपया ध्यान रखें कि जलवायु की स्थिति के अनुसार फसल वृद्धि और परिपक्व होने का समय अलग-अलग हो सकता है

क्रम सं.	विवरण/ संचालन/तरीका	कार्यप्रणाली का विवरण। प्रति एकड़ लागत
1	क्षेत्र की उपयुक्तता / कृषि-जलवायु क्षेत्र	भारत में बुश बीन्स सालों भर उगाई जा सकती हैं, लेकिन मध्यम मौसम में इनकी पैदावार अच्छी रहती है, इसलिए क्षेत्रानुसार बुआई मानसून (जुलाई-अगस्त), शीतकाल (अक्टूबर-नवंबर), और शुरुआती गर्मी (फरवरी-मार्च) में करनी चाहिए।
2	भूमि / मिट्टी	बुश बीन्स के लिए अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी (pH 5.5-6.0) उपयुक्त होती है। उपयुक्त तापमान 15 से 24 डिग्री सेल्सियस के बीच होता है।
3	मौसम। बुवाई/रोपाई का समय	पहाड़ी क्षेत्र: फरवरी-मार्च, मैदानी क्षेत्र: अक्टूबर-नवंबर
4	बीज दर। बुवाई/रोपाई का तरीका।	बीज की मात्रा: पहाड़ी इलाकों में लगभग 80 किग्रा/हेक्टेयर और मैदानी इलाकों में 50 किग्रा/हेक्टेयर की आवश्यकता होती है।
5	मुख्य खेत की तैयारी और रोपाई	पहाड़ी क्षेत्रों में: खेत की अच्छे से जुताई करें, गोबर खाद (FYM) मिलाएँ और उपयुक्त आकार के बेड बनाएँ। मैदानी क्षेत्रों में: दो बार जुताई करने के बाद क्यारियाँ और नालियाँ बनाएँ।
6	पौधों के बीच दूरी	पहाड़ी क्षेत्रों में: प्रत्येक मेड़ में 2 बीज लगाएँ और पंक्तियों या बेड में 30 x 15 सेमी की दूरी रखें। मैदानों में: बीजों को (प्रति मेड़ 2 बीज) मेड़ों के किनारों पर 45 x 30 सेमी की दूरी पर बोएं।
7	बुआई से पहले बीज उपचार	फफूंदी रोगों के नियंत्रण हेतु बीज बोने से 24 घंटे पहले बीजों का ट्राइकोडर्मा (4 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज) से उपचार करें।
8	जैविक और रासायनिक उर्वरक	अंतिम जुताई के दौरान 25 टन प्रति हेक्टेयर गोबर खाद का प्रयोग करें। मेड़ों के एक ओर 90 किग्रा/हेक्टेयर नाइट्रोजन और 125 किग्रा/हेक्टेयर फॉस्फोरस का प्रयोग करें
9	सिंचाई कार्यक्रम	बीज बोने के तुरंत बाद, फिर तीसरे दिन और आगे प्रत्येक सप्ताह एक बार।
10	निराई/ खेत की बीच-बीच में जुताई	बीज बोने के 20 से 25 दिन और 40 से 45 दिन बाद। हर बार निराई के बाद पौधों के चारों ओर मिट्टी चढ़ाएँ।
11	पोषक तत्व और विकास नियामक का छिड़काव	
12	कीट-पतंग और रोग नियंत्रण	थ्रिप्स / एफिड्स : फ्लोनिकामिड 50% WG (0.5 ग्राम/लीटर) या फ्लुबेंडियामाइड 8.33% + डेल्टामेथ्रिन 5.56% w/w SC (0.5 मिली/लीटर) व्हाइटफ्लाई : इमिडाक्लोप्रिड 30.5% SC (0.5 मिली/लीटर) पॉड बोरर : इमामेक्टिन बेंजोएट 5% SG (0.5 ग्राम/लीटर) या क्लोरोएंट्रानिलिप्रोल 18.5% w/w (0.5 मिली/लीटर) मोज़ेक: प्रभावित पौधों को निकालें और वेक्टर नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 30.5% SC @ 0.5 मिली/लीटर छिड़कें पाउडरी मिल्ड्यू : टेबुकोनाजोल 50% + ट्राइफ्लोक्सीस्ट्रोबिन 25% WG (0.5–1 ग्राम/लीटर) एंथ्राक्नोज़: प्रभावित पौधों एवं फलीयों को निकालें और टेबुकोनाजोल 38.39% w/w SC @ 1.25 मिली/लीटर छिड़कें। खेत में रोग और कीट नियंत्रण के संबंध में अधिक जानकारी के लिए अपने नजदीकी कृषि अधिकारियों से सलाह लें।
13	फसल काटना	बुआई के 60–75 दिन में फलियाँ कटाई करने योग्य हो जाएँगी। उन्हीं फलियों की कटाई करें जो मजबूत और नरम हों, तथा हर 2–4 दिन के अंतराल पर कटाई करें। गीली फलियों को न तोड़ें।
14	अनुमानित प्रति एकड़ उपज	आदर्श परिस्थितियों में 90–110 दिन में हरी फलियों की पैदावार 12–15 टन/हेक्टेयर होती है।
15	भंडारण	ताज़ी फलियाँ जल्दी खराब हो जाती हैं। कटाई के बाद रेफ्रिजरेटर में रखने पर 7–8 दिन तक ठीक रहती हैं।
16	क्या न करें	
17	क्या करें	
नोट	यह जानकारी सिर्फ़ सामान्य जानकारी के लिए है। विशेष क्षेत्र से जुड़ी अनुशंसाओं के लिए कृपया अपने संबंधित राज्य कृषि विभाग से संपर्क करें।	
सावधानियाँ	फसल वृद्धि और उपज पर अलग-अलग तत्वों का प्रभाव पड़ सकता है। अतः सलाह है कि सुझाव के लिए अपने नजदीकी कृषि अधिकारी से परामर्श करें। यह सुनिश्चित करें कि बेहतर गुणवत्ता के उर्वरक और कीटनाशक ही इस्तेमाल हों। बीज, उर्वरक और कीटनाशक की खरीद के बिल अपने पास रखें।	

ફણસી ખેતી માટેની ભલામણ કરેલી પદ્ધતિઓ

અભિનંદન! તમે ક્રિસ્ટલ પરિવારમાંથી શ્રેષ્ઠ ફણસી બીજમાંથી એક પસંદ કર્યું છે. ક્રિસ્ટલ પાસે ઉચ્ચ-ગુણવત્તાવાળા ફણસી બીજનું ઉત્પાદન કરવાનો મજબૂત અનુભવ છે. આ બીજ વ્યાપક સંશોધનનું પરિણામ છે, જેનો ઉદ્દેશ્ય વિવિધ કૃષિ આબોહવા માટે યોગ્ય ઉચ્ચ ઉપજ આપતા હાઇબ્રિડ પાક વિકસાવવાનો છે. ખેડૂતોને ઉચ્ચ ગુણવત્તાવાળા બીજ મળે તે સુનિશ્ચિત કરવા માટે ક્રિસ્ટલ બીજ ઉત્પાદન દરમિયાન નવીનતમ તકનીકો અપનાવે છે. ક્રિસ્ટલના ફણસીના બીજ ઉત્તમ અંકુરણ અને વધુ સારી શક્તિ પ્રદાન કરે છે, સાથે જૈવિક અને અજૈવિક તાણ સહન કરે છે.
ઉત્તમ ઉપજ મેળવવા માટે કૃપા કરીને શ્રેષ્ઠ ખેતી પદ્ધતિઓ અપનાવો. નીચે આપેલ સામાન્ય ભલામણો આપવામાં આવી છે, તેથી અમે તમને કોઈપણ નિર્ણય લેતા પહેલા આ ભલામણો વાંચવા વિનંતી કરીએ છીએ.

ફણસી હાઇબ્રિડ	કુસુમા, લલિતા											
સમયગાળો	100-110 દિવસ											
ખરીફ	હા											
રાબી	હા											
વસંત	હા											
સિંચાઈનો સ્ત્રોત	નહેર/બોરવેલ											

કૃપા કરીને નોંધ લો કે હવામાન પરિસ્થિતિઓ અનુસાર પાકનો વિકાસ અને પરિપક્વતા અલગ અલગ હોઈ શકે છે.

ક્રમ નં.	વિગતો/કામગીરી/પ્રેક્ટિસ	કામગીરીની વિગતો. પ્રતિ એકર ઇનપુટ
1	વિસ્તાર/કૃષિ-આબોહવા ક્ષેત્રની યોગ્યતા	ભારતમાં ફણસી આખું વર્ષ ઉગાડી શકાય છે, પરંતુ તે મધ્યમ હવામાનમાં સારું પરિણામ આપે છે, તેથી પ્રદેશના આધારે ચોમાસા (જુલાઈ-ઓગસ્ટ), શિયાળો (ઓક્ટોબર-નવેમ્બર) અને ઉનાળાની શરૂઆતમાં (ફેબ્રુઆરી-માર્ચ) વાવણી કરવી જોઈએ.
2	જમીન / માટી	5.5-6.0 ની pH રેન્જ ધરાવતી સારી રીતે નિતારવાળી ગોરાડુ જમીન જરૂરી છે. શ્રેષ્ઠ તાપમાન 15-24° સેલ્સિયસ છે.
3	ઋતુ. વાવણી/વાવેતરનો સમય	ટેકરીઓ: ફેબ્રુઆરી-માર્ચ, મેદાનો: ઓક્ટોબર-નવેમ્બર
4	બીજ દર. વાવણી/વાવેતર પદ્ધતિ.	બીજ દર: ટેકરીઓ માટે લગભગ 80 કિગ્રા/હેક્ટર અને મેદાની વિસ્તારો માટે 50 કિગ્રા/હેક્ટર બીજની જરૂર પડે છે.
5	મુખ્ય ખેતરની તૈયારી અને વાવેતર	ટેકરીઓ: માટીને સારી રીતે ખોદીને તેમાં છાણિયું ખાતર નાખો અને અનુકૂળ કદના પથ્થારી બનાવો. મેદાનો: બે વાર ખેડાણ કર્યા પછી, પટ્ટાઓ અને ચાસ બનાવો.
6	અંતર	ટેકરીઓમાં, બીજ (2 બીજ/ટેકરી) લાઈનોમાં અથવા પથ્થારીમાં 30 x 15 સે.મી.ના અંતરે વાવો. મેદાની વિસ્તારોમાં, ટેકરીઓની બાજુઓમાં 45 x 30 સે.મી.ના અંતરે બીજ (2 બીજ/ટેકરી) વાવો.
7	વાવણી પહેલાં બીજ માવજત	ફૂગના રોગોને નિયંત્રિત કરવા માટે વાવણીના 24 કલાક પહેલા બીજને ટ્રાઇકોડર્મા 4 ગ્રામ/કિલો બીજ સાથે માવજત કરો.
8	ખાતર અને ખાતરો	છેલ્લી ખેડાણ વખતે FYM 25 ટન/હેક્ટર લાગુ કરો. પટ્ટાઓની એક બાજુ 90 કિગ્રા/હેક્ટરના દરે N અને 125 કિગ્રા/હેક્ટરના દરે P આપવું જોઈએ.
9	સિંચાઈ સમયપત્રક	વાવણી પછી તરત જ, ત્રીજા દિવસે અને ત્યારબાદ અઠવાડિયામાં એકવાર.
10	નીંદણ/આંતર-ખેતી	વાવણી પછી 20-25 દિવસ અને 40-45 દિવસ. દરેક નિંદામણ પછી પાકને માટીથી ભેળવી દેવો જોઈએ.
11	સૂક્ષ્મ પોષકતત્વો/વૃદ્ધિ નિયમનકાર સ્પ્રે	
12	જીવાત અને રોગ નિયંત્રણ	થ્રિપ્સ / મોલો મચ્છર: ફ્લોનીકામિડ ૫૦% WG (0.5 ગ્રામ/લિટર) અથવા ફ્લુબેન્ડિયામાઇડ 8.33% + ડેલ્ટામેથ્રિન 5.56% SC (0.5 મિલી/લિટર) સાથે સફેદ માખી: ઇમિડાક્લોપ્રિડ 30.5% SC (0.5 મિલી/લિટર) શીંગ ખાનાર ઈયળ: એમામેક્ટીન બેન્ઝોએટ 5% SG (0.5 ગ્રામ/લિટર) અથવા ક્લોરાન્ટ્રાનિલિપ્રોલ 18.5% w/w (0.5 મિલી/લિટર) મોઝેક: અસરગ્રસ્ત છોડ દૂર કરો અને વાહકને નિયંત્રિત કરવા માટે ઇમિડાક્લોપ્રિડ 30.5% SC (0.5 મિલી/લિટર) નો છંટકાવ કરો. પાવડરી માઇલ્ડ્યુ: ટેબુકોનાઝોલ 50% + ટ્રાઇફ્લોક્સીસ્ટ્રોબિન ૨૫% WG (0.5 થી 1 ગ્રામ પ્રતિ લિટર) એન્થ્રેકનોઝ: અસરગ્રસ્ત છોડ અને શીંગો દૂર કરો અને ટેબુકોનાઝોલ 38.39% w/w SC (1.25 મિલી પ્રતિ લિટર) નો છંટકાવ કરો. ખેતરમાં રોગ નિયંત્રણ અને નિયંત્રણ માટે વધુ માહિતી માટે, કૃપા કરીને તમારા સ્થાનિક કૃષિ અધિકારીઓનો સંપર્ક કરો.
13	લણણી	શીંગો 60-75 DAS માં લણણી માટે તૈયાર થઈ જશે. કાપણી માટે શીંગો મજબૂત અને કોમળ હોવી જોઈએ, અને દર 2 થી 4 દિવસે કાપણી કરવી જોઈએ. ભીની શીંગો કાપવાનું ટાળો.
14	અપેક્ષિત ઉપજ/એકર	આદર્શ પરિસ્થિતિઓમાં 90 થી 110 દિવસમાં લીલી શીંગો 12 - 15 ટન/હેક્ટર.
15	સંગ્રહ	તાજા ઉપયોગ માટે વપરાતા કઠોળ ખૂબ જ નાશવંત હોય છે. લણણી પછી રેફ્રિજરેશન કરવાથી શેલ્ફ લાઇફ 7-8 દિવસ સુધી વધી શકે છે.
16	ના કરો	
17	શું કરવું	
નોંધ	ઉપરોક્ત માહિતી એક સામાન્ય સલાહ છે. ચોક્કસ પ્રદેશ સંબંધિત ચોક્કસ ભલામણો માટે, કૃપા કરીને તમારા સ્થાનિક રાજ્ય કૃષિ વિભાગનો સંપર્ક કરો.	
સાવચેતીનાં પગલાં	પાકની વૃદ્ધિ અને ઉપજ વિવિધ પરિબળોથી પ્રભાવિત થઈ શકે છે. તેથી, સલાહ માટે તમારા સ્થાનિક કૃષિ અધિકારીનો સંપર્ક કરવાની ભલામણ કરવામાં આવે છે. ખાતરી કરો કે ફક્ત ઉચ્ચ ગુણવત્તાવાળા ખાતરો અને જંતુનાશકોનો ઉપયોગ થાય છે. બીજ, ખાતર અને જંતુનાશકોની ખરીદીના બિલ સાચવી રાખો.	

CRYSTAL
Inspiring Growth

I&B Seeds
INDUS SEEDS | SEED PLANT SCIENCE

शेंगवर्गीय पीक व्यवस्थापन पद्धती

अभिनंदन! तुम्ही क्रिस्टल कुटुंबातील सर्वोत्तम शेंगवर्गीय बियाण्यांपैकी एक बियाणे निवडले आहे. क्रिस्टलला उच्च दर्जाचे शेंगवर्गीय बियाणे तयार करण्याचा चांगला अनुभव आहे. विविध कृषी हवामानासाठी योग्य उच्च-उत्पादन देणारी संकरित पिके विकसित करण्याच्या उद्देशाने केलेल्या व्यापक संशोधनाचे परिणाम म्हणजेच हे बियाणे . शेतकऱ्यांना उच्च दर्जाचे बियाणे मिळावे यासाठी क्रिस्टल नेहमीच बियाणांच्या उत्पादना दरम्यान नवीनतम तंत्रज्ञानाचा अवलंब करते. क्रिस्टलच्या शेंगवर्गीय बियाणांमुळे, जैविक आणि अजैविक ताण सहन करण्याच्या शक्तीसह पिके जोमाने उगवतात आणि वाढतात.
उत्कृष्ट उत्पादन मिळविण्यासाठी कृपया सर्वोत्तम शेती पद्धतींचा अवलंब करा. खाली सामान्य शिफारसी दिल्या आहेत, त्यामुळे कोणताही निर्णय घेण्यापूर्वी आम्ही तुम्हाला या शिफारसी वाचण्याची विनंती करतो.

शेंगवर्गीय हायब्रीड	कुसुमा, ललिता											
कालावधी	100-110 दिवस											
खरीप	होय											
रब्बी	होय											
वसंत ऋतू	होय											
सिंचनाचा स्रोत	पाट/बोअरवेल											

कृपया नोंद घ्या की, हवामानाच्या परिस्थितीनुसार पिकाची वाढ आणि परिपक्वता वेगवेगळी असू शकते.

अनु. क्र.	तपशील/कामकाज/प्रत्यक्ष कृती	कार्याचे तपशील. प्रति एकर उत्पादन
1	क्षेत्राची योग्यता/ कृषी-हवामान क्षेत्र	भारतात वर्षभर शेंगवर्गीय वनस्पतींची लागवड करता येते, परंतु मध्यम हवामानात त्या चांगले उत्पादन देतात, म्हणून प्रत्येक प्रदेशानुसार पावसाळ्यात (जुलै-ऑगस्ट), हिवाळा (ऑक्टोबर-नोव्हेंबर) आणि उन्हाळ्याच्या सुरुवातीला (फेब्रुवारी-मार्च) पेरणी करावी.
2	जमीन/माती	चांगल्या निचऱ्याची चिकणमाती माती ज्याचा सामू (pH)ची श्रेणी 5.5-6.0 आहे इष्टतम तापमान 15- 24° सेल्सियस असावे.
3	हंगाम. पेरणी/लागवडीची वेळ	डोंगराळ प्रदेश: फेब्रुवारी-मार्च, मैदानी प्रदेश: ऑक्टोबर-नोव्हेंबर
4	बियाणांचा दर पेरणी/लागवडीची पद्धत	बियाण्याचे प्रमाण: बांधावर किंवा चरीवर सुमारे 80 किलो/हेक्टर आणि सपाट पाटासाठी 50 किलो/हेक्टर आवश्यक असते.
5	मुख्य शेताची तयारी आणि लागवड	चर: माती पूर्णपणे खोदून त्यात शेणखत मिसळा आणि सोयीस्कर आकाराचे बेड तयार करा. सपाट पाट: दोन नांगरणीनंतर, बांध आणि सरी तयार करा.
6	अंतर	चरीवर, बियाणे (2 बियाणे/चर) ओळींमध्ये किंवा वाफ्यांमध्ये 30 x 15 सेमी अंतरावर पेरा. सपाट पाटात, कड्यांच्या बाजूने 45 x 30 सेमी अंतरावर बियाणांची (2 बिया/चर) पेरणी करा.
7	पेरणीपूर्वी बियाणांवर प्रक्रिया	बुरशीजन्य रोगांवर नियंत्रण मिळविण्यासाठी पेरणीपूर्वी 24 तास आधी 4 ग्रॅम/किलो बियाण्यांवर ट्रायकोडर्माची प्रक्रिया करा.
8	सेंद्रिय पदार्थ आणि खते	शेवटच्या नांगरणीच्या वेळी प्रति हेक्टर 25 टन शेणखत द्यावे. 90 किलो/हेक्टर नत्र आणि 125 किलो/हेक्टर हे चरीच्या एका बाजूने द्यावे.
9	पेरणीपूर्वी बियाणे प्रक्रिया	पेरणीनंतर लगेच, तिसऱ्या दिवशी आणि त्यानंतर आठवड्यातून एकदा.
10	खुरपणी/आंतरमशागत	पेरणीनंतर 20 – 25 दिवस आणि 40 – 45 दिवसांनी. प्रत्येक खुरपणीनंतर पीक मातीने भरावे.
11	सूक्ष्म पोषक घटक/वाढ नियामक फवारण्या	
12	कीटक आणि रोग नियंत्रण	फुलकिडा/मावा: फ्लोनिकामिड 50 % WG (0.5 ग्रॅम/लिटर) किंवा फ्लुबेन्डियामाइड 8.33% + डेल्टामेथ्रिन 5.56% भा/आ. SC (0.5 मिली/लिटर) पांढरी माशी: इमिडाक्लोप्रिड 30.5% SC (0.5 मिली/लिटर) घाटे अळी: एमामेक्टिन बेंझोएट 5% SG (0.5 ग्रॅम/लिटर) किंवा क्लोरॉंट्रानिलिप्रोल 18.5% भा/आ (0.5 मिली/लिटर) मोजॅक: प्रभावित झाडे काढून टाका आणि वाहकाचे नियंत्रण करण्यासाठी इमिडाक्लोप्रिड 30.5% SC (0.5 मिली/लिटर) फवारणी करा. भुरी बुरशी: टेबुकोनाझोल 50% + ट्रायफ्लॉक्सिस्ट्रोबिन 25% WG (0.5 ते 1 ग्रॅम प्रति लिटर) अँथ्रॅकनोज: प्रभावित झाडे आणि शेंगा काढून टाका आणि टेबुकोनाझोल 38.39% भा/आ SC (1.25 मिली प्रति लिटर) सह फवारणी करा. शेतातील नियंत्रणासाठी आणि रोगाच्या अधिक माहितीसाठी, कृपया तुमच्या स्थानिक कृषी अधिकाऱ्यांचा सल्ला घ्या.
13	कापणी	60-75 दिवसांत शेंगा कापणीसाठी तयार होतात. काढणीसाठी शेंगा घट्ट आणि कोवळ्या असाव्यात आणि दर 2 ते 4 दिवसांनी कापणी करावी. ओल्या शेंगा काढणे टाळा.
14	अपेक्षित उत्पादन/एकर	आदर्श परिस्थितीत प्रति हेक्टर 90 ते 110 दिवसांत 12 - 15 टन हिरव्यागार शेंगा मिळतात.
15	साठवणूक	ताज्या वापरासाठी वापरल्या जाणाऱ्या शेंगा अत्यंत नाशवंत असतात. कापणीनंतर रेफ्रिजरेटरमध्ये ठेवल्यास त्यांचे आयुर्मान 7-8 दिवसांपर्यंत वाढू शकते.
16	करू नका	
17	करा	
नोंद	वरील माहिती मधून सामान्य सल्ले दिले आहेत. विशिष्ट प्रदेशाशी संबंधित विशिष्ट शिफारसींसाठी कृपया तुमच्या स्थानिक राज्य कृषी विभागाशी संपर्क साधा.	
घेण्याची काळजी	पिकांच्या वाढीवर आणि उत्पन्नावर विविध घटक परिणाम करू शकतात. म्हणून, तुमच्या स्थानिक कृषी अधिकाऱ्यांचा सल्ला घेण्याची शिफारस केली जाते. केवळ उच्च दर्जाची खते आणि कीटकनाशके वापरली जात आहेत याची खात्री करा. बियाणे, खते आणि कीटकनाशके खरेदी करताना बिल बाळगा.	

ಬುಷ್ ಬೀನ್ಸ್ ಬೇಸಾಯದ ಕ್ರಮಗಳು

ಅಭಿನಂದನೆಗಳು! ನೀವು ಕ್ರಿಸ್ಟಲ್ ಕುಟುಂಬದ ಅತ್ಯುತ್ತಮ ಬುಷ್ ಬೀನ್ಸ್ ಬೀಜಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದನ್ನು ಆರಿಸಿದ್ದೀರಿ. ಉತ್ತಮ ಗುಣಮಟ್ಟದ ಬುಷ್ ಬೀನ್ಸ್ ಬೀಜಗಳನ್ನು ಉತ್ಪಾದಿಸುವಲ್ಲಿ ಕ್ರಿಸ್ಟಲ್‌ಗೆ ಗಣನೀಯ ಅನುಭವವಿದೆ. ಈ ಬೀಜಗಳು ವ್ಯಾಪಕವಾದ ಸಂಶೋಧನೆಯ ಫಲಿತಾಂಶವಾಗಿದ್ದು, ವಿವಿಧ ಕೃಷಿ ಹವಾಮಾನಗಳಿಗೆ ಸೂಕ್ತವಾದ ಹೆಚ್ಚಿನ ಇಳುವರಿ ನೀಡುವ ಹೈಬ್ರಿಡ್ ಬೆಳೆಗಳನ್ನು ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವ ಗುರಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿವೆ. ರೈತರಿಗೆ ಅತ್ಯುತ್ತಮ ಗುಣಮಟ್ಟದ ಬೀಜಗಳು ದೊರೆಯುವುದನ್ನು ಖಾತ್ರಿಪಡಿಸಲು ಕ್ರಿಸ್ಟಲ್ ಬೀಜ ಉತ್ಪಾದನೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಇತ್ತೀಚಿನ ತಂತ್ರಜ್ಞಾನಗಳನ್ನು ಅಳವಡಿಸಿಕೊಂಡಿದೆ. ಕ್ರಿಸ್ಟಲ್‌ನ ಬುಷ್ ಬೀನ್ಸ್ ಬೀಜಗಳು ಅತ್ಯುತ್ತಮ ಮೊಳಕೆ ಮತ್ತು ಉತ್ತಮ ಚೈತನ್ಯವನ್ನು ನೀಡುತ್ತವೆ, ಜೊತೆಗೆ ಜೈವಿಕ ಮತ್ತು ಅಜೈವಿಕ ಒತ್ತಡಗಳನ್ನು ಸಹಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವನ್ನು ಹೊಂದಿವೆ.
ಅತ್ಯುತ್ತಮ ಇಳುವರಿ ಪಡೆಯಲು ದಯವಿಟ್ಟು ಉತ್ತಮ ಕೃಷಿ ಪದ್ಧತಿಗಳನ್ನು ಅಳವಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಿ. ಈ ಕೆಳಗಿನ ಸಾಮಾನ್ಯ ಶಿಫಾರಸ್ಸುಗಳನ್ನು ಒದಗಿಸಲಾಗಿದೆ, ಆದ್ದರಿಂದ ಯಾವುದೇ ನಿರ್ಧಾರಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳುವ ಮೊದಲು ಈ ಶಿಫಾರಸ್ಸುಗಳನ್ನು ಓದಲು ದಯವಿಟ್ಟು ಕೇಳಿಕೊಳ್ಳುತ್ತೇವೆ.

ಹೈಬ್ರಿಡ್ ಬುಷ್ ಬೀನ್ಸ್	**ಕುಸುಮಾ , ಲಲಿತಾ**											
ಅವಧಿ	100-110 ದಿನಗಳು											
ಮುಂಗಾರು	ಹೌದು											
ಹಿಂಗಾರು	ಹೌದು											
ವಸಂತ	ಹೌದು											
ನೀರಾವರಿ ಪದ್ಧತಿ	ಕಾಲುವೆ/ಬೋರ್‌ವೆಲ್											

ದಯವಿಟ್ಟು ಗಮನಿಸಿ: ಹವಾಮಾನ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಗಳ ಪ್ರಕಾರ ಬೆಳೆಯ ಬೆಳವಣಿಗೆ ಮತ್ತು ಪಕ್ವತೆ ವಿಭಿನ್ನವಾಗಿರಬಹುದು

ಕ್ರಮ ಸಂಖ್ಯೆ.	ವಿವರಗಳು/ ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಗಳು /ಪದ್ಧತಿ	ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆಯ ವಿವರಗಳು / ಪ್ರತಿ ಎಕರೆಗೆ ಒಳಹರಿವು
1	ಪ್ರದೇಶದ ಸೂಕ್ತತೆ/ ಕೃಷಿ-ಹವಾಮಾನ ವಲಯ	ಇಂಡಿಯಾದಲ್ಲಿ ಬುಷ್ ಬೀನ್ಸ್‌ಗಳನ್ನು ವರ್ಷವಿಡೀ ಬೆಳೆಯಬಹುದು, ಆದರೆ ಅವು ಮಧ್ಯಮ ಹವಾಮಾನದಲ್ಲಿ ಉತ್ತಮವಾಗಿ ಬೆಳೆಯುತ್ತವೆ. ಆದ್ದರಿಂದ, ಪ್ರದೇಶವನ್ನು ಅವಲಂಬಿಸಿ ಮುಂಗಾರು (ಜುಲೈ-ಆಗಸ್ಟ್), ಚಳಿಗಾಲ (ಅಕ್ಟೋಬರ್-ನವೆಂಬರ್) ಮತ್ತು ಬೇಸಿಗೆಯ ಆರಂಭದಲ್ಲಿ (ಫೆಬ್ರವರಿ-ಮಾರ್ಚ್) ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡುವುದು ಸೂಕ್ತ.
2	ಭೂಮಿ / ಮಣ್ಣು	5.5–6.0 ರ ಪಿಎಚ್ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯೊಂದಿಗೆ ಚೆನ್ನಾಗಿ ನೀರು ಬಸಿದು ಹೋಗುವ ಲೋಮಿ ಮಣ್ಣು ಅವಶ್ಯಕವಾಗಿದೆ. ಸೂಕ್ತ ಉಷ್ಣಾಂಶವು 15–24∘C ಆಗಿದೆ.
3	ಋತು. ಬಿತ್ತನೆ/ನಾಟಿ ಸಮಯ	ಗುಡ್ಡಗಾಡು ಪ್ರದೇಶಗಳು: ಫೆಬ್ರವರಿ – ಮಾರ್ಚ್, ಬಯಲು ಪ್ರದೇಶಗಳು: ಅಕ್ಟೋಬರ್ – ನವೆಂಬರ್
4	ಬೀಜದ ಪ್ರಮಾಣ. ಬಿತ್ತನೆ/ನಾಟಿ ವಿಧಾನ.	ಬೀಜದ ದರ: ಗುಡ್ಡಗಾಡು ಪ್ರದೇಶಗಳಿಗೆ ಸುಮಾರು 80 ಕೆ.ಜಿ./ಹೆಕ್ಟೇರ್ ಮತ್ತು ಬಯಲು ಪ್ರದೇಶಗಳಿಗೆ 50 ಕೆ.ಜಿ./ಹೆಕ್ಟೇರ್ ಬೀಜದ ಅಗತ್ಯವಿದೆ.
5	ಮುಖ್ಯ ಹೊಲವನ್ನು ತಯಾರು ಮಾಡುವುದು ಮತ್ತು ನಾಟಿ	ಗುಡ್ಡಗಾಡು ಪ್ರದೇಶಗಳು: ಮಣ್ಣನ್ನು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಅಗೆದು, FYM ಮಿಶ್ರಣ ಮಾಡಿ ಸೂಕ್ತ ಗಾತ್ರದ ಪಾತಿಗಳನ್ನು ಮಾಡಿ. ಬಯಲು ಪ್ರದೇಶಗಳು: ಎರಡು ಬಾರಿ ಉಳುಮೆ ಮಾಡಿದ ನಂತರ, ಏರಿ ಮತ್ತು ಸಾಲುಗಾಲುವೆಗಳನ್ನು ಮಾಡಿ.
6	ಅಂತರ	ಗುಡ್ಡಗಾಡು ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿ, ಸಾಲುಗಳಲ್ಲಿ ಅಥವಾ ಪಾತಿಗಳಲ್ಲಿ 30×15 ಸೆಂ.ಮೀ. ಅಂತರದಲ್ಲಿ ಬೀಜಗಳನ್ನು (2 ಬೀಜ/ಗುಂಡಿಗೆ) ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿ. ಬಯಲು ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿ, ಏರಿಗಳ ಬದಿಗಳಲ್ಲಿ 45×30 ಸೆಂ.ಮೀ. ಅಂತರದಲ್ಲಿ ಬೀಜಗಳನ್ನು (2 ಬೀಜ/ಗುಂಡಿಗೆ) ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿ.
7	ಬಿತ್ತನೆಯ ಮೊದಲು ಬೀಜ ಸಂಸ್ಕರಣೆ	ಶಿಲೀಂಧ್ರ ರೋಗಗಳನ್ನು ನಿಯಂತ್ರಿಸಲು ಬಿತ್ತನೆಗೆ 24 ಗಂಟೆಗಳ ಮೊದಲು ಪ್ರತಿ ಕೆ.ಜಿ. ಬೀಜಕ್ಕೆ 4 ಗ್ರಾಂ ಟ್ರೈಕೋಡರ್ಮಾ ಬಳಸಿ ಬೀಜೋಪಚಾರ ಮಾಡಿ.
8	ಗೊಬ್ಬರ ಮತ್ತು ರಸಗೊಬ್ಬರಗಳು	ಕೊನೆಯ ಉಳುಮೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ 25 ಟನ್ FYM ಹಾಕಿ. ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ 90ಕೆ.ಜಿ.ಸಾರಜನಕ ಮತ್ತು 125ಕೆ.ಜಿ. ರಂಜಕವನ್ನು ಏರಿಗಳ ಒಂದು ಬದಿಯಲ್ಲಿ ಹಾಕಬೇಕು
9	ನೀರಾವರಿ ವೇಳಾಪಟ್ಟಿ	ಬಿತ್ತಿದ ತಕ್ಷಣ, ಮೂರನೇ ದಿನದಂದು ಮತ್ತು ನಂತರ ವಾರಕ್ಕೊಮ್ಮೆ.
10	ಕಳೆ ತೆಗೆಯುವಿಕೆ/ ಅಂತರ-ಬೇಸಾಯ	ಬಿತ್ತಿದ 20–25 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಮತ್ತು 40–45 ದಿನಗಳ ನಂತರ. ಪ್ರತಿ ಕಳೆ ತೆಗೆದ ನಂತರ ಬೆಳೆಗೆ ಮಣ್ಣು ಏರಿಸಬೇಕು.
11	ಸೂಕ್ಷ್ಮ ಪೋಷಕಾಂಶಗಳು/ಬೆಳವಣಿಗೆ ನಿಯಂತ್ರಕ ಸಿಂಪಡಣೆಗಳು	
12	ಕೀಟ ಮತ್ತು ರೋಗ ನಿಯಂತ್ರಣ	ಥ್ರಿಪ್ಸ್/ಎಲೆ ತಿಗಣೆ ನಿಯಂತ್ರಣಕ್ಕೆ: ಫ್ಲೋನಿಕಾಮಿಡ್ 50% WG(0.5 ಗ್ರಾಂ/ಲೀಟರ್) ಅಥವಾ ಫ್ಲುಬೆಂಡಿಯಾಮೈಡ್ 8.33%+ಡೆಲ್ಟಾಮೆಥ್ರಿನ್ 5.56% w/w SC(0.5 ಮಿ.ಲೀ./ಲೀಟರ್) ಬಳಸಿ ಬಿಳಿ ನೊಣ ನಿಯಂತ್ರಣಕ್ಕೆ: ಇಮಿಡಾಕ್ಲೋಪ್ರಿಡ್ 30.5% SC(0.5 ಮಿ.ಲೀ./ಲೀಟರ್) ಬಳಸಿ ಕಾಯಿ ಕೊರಕ ನಿಯಂತ್ರಣಕ್ಕೆ: ಎಮಾಮೆಕ್ಟಿನ್ ಬೆಂಜೋಯೇಟ್ 5% SG(0.5 ಗ್ರಾಂ/ಲೀಟರ್) ಅಥವಾ ಕ್ಲೋರಂಟ್ರಾನಿಲಿಪ್ರೋಲ್ 18.5% w/w(0.5 ಮಿ.ಲೀ./ಲೀಟರ್) ಬಳಸಿ ಮೊಸಾಯಿಕ್ ರೋಗ ನಿಯಂತ್ರಣಕ್ಕೆ: ರೋಗಪೀಡಿತ ಸಸ್ಯಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಹಾಕಿ ಮತ್ತು ವಾಹಕವನ್ನು ನಿಯಂತ್ರಿಸಲು ಇಮಿಡಾಕ್ಲೋಪ್ರಿಡ್ 30.5% SC(0.5 ಮಿ.ಲೀ./ಲೀಟರ್) ಸಿಂಪಡಿಸಿ ಬೂದಿರೋಗ (Powdery mildew) ನಿಯಂತ್ರಣಕ್ಕೆ: ಟೆಬುಕೊನಜೋಲ್ 50%+ಟ್ರೈಫ್ಲೋಕ್ಸಿಸ್ಟ್ರೋಬಿನ್ 25% WG(0.5 ರಿಂದ 1 ಗ್ರಾಂ/ಲೀಟರ್) ಬಳಸಿ ಆಂಥ್ರಾಕ್ನೋಸ್ ರೋಗ ನಿಯಂತ್ರಣಕ್ಕೆ: ರೋಗಪೀಡಿತ ಸಸ್ಯಗಳು ಮತ್ತು ಕಾಯಿಗಳನ್ನು ತೆಗೆದುಹಾಕಿ ಮತ್ತು ಟೆಬುಕೊನಜೋಲ್ 38.39% w/w SC(1.25 ಮಿ.ಲೀ./ಲೀಟರ್) ಸಿಂಪಡಿಸಿ. ಹೊಲದಲ್ಲಿ ಕೀಟ ಮತ್ತು ರೋಗ ನಿಯಂತ್ರಣದ ಕುರಿತು ಹೆಚ್ಚಿನ ಮಾಹಿತಿಗಾಗಿ, ದಯವಿಟ್ಟು ನಿಮ್ಮ ಸ್ಥಳೀಯ ಕೃಷಿ ಅಧಿಕಾರಿಗಳನ್ನು ಸಂಪರ್ಕಿಸಿ.
13	ಕೊಯ್ಲು	60–75 ದಿನಗಳು ನಲ್ಲಿ ಕಾಯಿಗಳು ಕಟಾವಿಗೆ ಸಿದ್ಧವಾಗುತ್ತವೆ. ಕಟಾವು ಮಾಡಲು ಕಾಯಿಗಳು ಗಟ್ಟಿಯಾಗಿ ಮತ್ತು ಮೃದುವಾಗಿರಬೇಕು, ಮತ್ತು ಪ್ರತಿ 2 ರಿಂದ 4 ದಿನಗಳಿಗೊಮ್ಮೆ ಕಟಾವು ಮಾಡಿ. ಒದ್ದೆಯಾದ ಕಾಯಿಗಳನ್ನು ಕಟಾವು ಮಾಡುವುದನ್ನು ತಪ್ಪಿಸಿ.
14	ನಿರೀಕ್ಷಿತ ಇಳುವರಿ/ಎಕರೆಗೆ	ಸೂಕ್ತ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಗಳಲ್ಲಿ 90 ರಿಂದ 110 ದಿನಗಳಲ್ಲಿ 12–15 ಟನ್/ಹೆಕ್ಟೇರ್ ಹಸಿ ಕಾಯಿಗಳ ಇಳುವರಿ ಬರುತ್ತದೆ.
15	ಶೇಖರಣೆ	ತಾಜಾ ಉದ್ದೇಶಗಳಿಗಾಗಿ ಬಳಸುವ ಬೀನ್ಸ್ ಹೆಚ್ಚು ಬೇಗ ಹಾಳಾಗುತ್ತವೆ. ಕಟಾವಿನ ನಂತರ ಶೀತಲೀಕರಣ ಮಾಡುವುದರಿಂದ ಸಂಗ್ರಹಣಾ ಅವಧಿಯನ್ನು 7–8 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ಹೆಚ್ಚಿಸಬಹುದು.
16	ಮಾಡಬೇಡಿ	
17	ಮಾಡಬೇಕಾದವು	
ಸೂಚನೆ	ಮೇಲಿನ ಮಾಹಿತಿಯು ಸಾಮಾನ್ಯ ಸಲಹೆಯಾಗಿದೆ. ನಿರ್ದಿಷ್ಟ ಪ್ರದೇಶಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ವಿಶೇಷ ಶಿಫಾರಸ್ಸುಗಳಿಗಾಗಿ, ದಯವಿಟ್ಟು ನಿಮ್ಮ ಸ್ಥಳೀಯ ರಾಜ್ಯ ಕೃಷಿ ಇಲಾಖೆಯನ್ನು ಸಂಪರ್ಕಿಸಿ.	
ಎಚ್ಚರಿಕೆಗಳು	ಬೆಳೆಯ ಬೆಳವಣಿಗೆ ಮತ್ತು ಇಳುವರಿಯು ವಿವಿಧ ಅಂಶಗಳಿಂದ ಪ್ರಭಾವಿತವಾಗಬಹುದು. ಆದ್ದರಿಂದ, ಸಲಹೆಗಾಗಿ ನಿಮ್ಮ ಸ್ಥಳೀಯ ಕೃಷಿ ಅಧಿಕಾರಿಯನ್ನು ಸಂಪರ್ಕಿಸಲು ಶಿಫಾರಸು ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ಉತ್ತಮ ಗುಣಮಟ್ಟದ ರಸಗೊಬ್ಬರಗಳು ಮತ್ತು ಕೀಟನಾಶಕಗಳನ್ನು ಮಾತ್ರ ಬಳಸಲಾಗಿದೆ ಎಂದು ಖಚಿತಪಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಿ. ಬೀಜಗಳು, ರಸಗೊಬ್ಬರಗಳು ಮತ್ತು ಕೀಟನಾಶಕಗಳ ಖರೀದಿಯ ಬಿಲ್‌ಗಳನ್ನು ಉಳಿಸಿಕೊಳ್ಳಿ.	

పొద చిక్కుడులో పాటించవలసిన ఆచరణల పాకేజి

శుభాకాంక్షలు! క్రిస్టల్ కుటుంబము యొక్క అత్యంత ఉత్తమమైన పొద చిక్కుడు విత్తనాల్లో ఒకదానిని మీరు ఎంచుకున్నారు. ఉత్తమ-నాణ్యత కలిగిన పొద చిక్కుడు విత్తనాలను ఉత్పత్తి చేయడములో క్రిస్టల్ కి చాలా అనుభవము వుంది. ఈ విత్తనాలు విస్తారముగా చేసిన పరిశోధన యొక్క ఫలితము, వీటిని వివిధ వ్యవసాయ వాతావరణాలకి అనుకూలముగా అధిక-దిగుబడి ఇవ్వడమనే ఉద్దేశ్యముతో రూపొందించడము జరిగినది. రైతులకు అత్యధిక నాణ్యత కలిగిన విత్తనాలను అందించడానికి విత్తనాలను ఉత్పత్తి చేసే సమయములో క్రిస్టల్ అత్యాధునిక టెక్నాలజీలను పాటిస్తుంది. క్రిస్టల్ పొద చిక్కుడు విత్తనాలు బయోటిక్ & ఏబయోటిక్ పత్తిడికి తట్టుకునే సామర్థ్యముతో అద్భుతమైన మొలకెత్తే తత్వాలను & మెరుగైన బలమును కలిగివుంటాయి.
అద్భుతమైన దిగుబడి కొరకు దయచేసి ఉత్తమమైన వ్యవసాయ ఆచరణలను పాయించండి. క్రింద సాధారణ సూచనలు ఇవ్వబడ్డాయి, కాబట్టి ఏవైనా నిర్ణయాలు తీసుకునే ముందు ఈ సూచనలను చదవాలని మేము మిమ్మల్ని అభ్యర్థిస్తున్నాము.

హైబ్రిడ్ పొద చిక్కుడు	కుసుమ , లలిత											
కాలము పరిమితి	100-110 రోజులు											
ఖరీఫ్	అవును											
రబీ	అవును											
వసంత కాలము	అవును											
నీటి పారుదల వనరు	కాలువ/బోర్ బావి											

దయచేసి గమనించండి వాతావరణ పరిస్థితుల ఆధారముగా పంట ఎదుగుదల & పక్వము కాలము మారవచ్చు

క్ర. సం.	వివరాలు/ఆపరేషన్లు/ఆచరణలు	ఆపరేషన్ వివరాలు. ఎకరానికి ఇన్పుట్
1	ప్రాంతము యొక్క అనుకూలత/వ్యవసాయ-వాతావరణ జోన్	భారతదేశములో పొద చిక్కుడుని సంవత్సరము-అంతటా పెంచవచ్చు, కానీ అవి మధ్యస్థమైన వాతావరణములో బాగా పండుతాయి. కాబట్టి ప్రాంతమును బట్టి వాటిని వానా కాలము (జులై-ఆగస్ట్), శీతా కాలము (అక్టోబర్-నవంబర్) మరియు వేసవిలో ముందరి కాలము (ఫిబ్రవరి-మార్చి) లో నాటాలి.
2	భూమి/మట్టి	బాగా నీరు ఇంకే లోమీ నేలలు pH 5.5-6.0 లో వున్నవి అవసరము. సరైన ఉష్ణోగ్రత 15- 24°C.
3	కాలము. విత్తే/నాటే సమయము	కొండలు: ఫిబ్రవరి-మార్చి, పల్లపు ప్రాంతాలు: అక్టోబర్-నవంబర్
4	విత్తనము రేట్. విత్తే/నాటే పద్ధతి.	విత్తనాల రేట్: కొండలలో హెక్టార్/80 కిలోలు మరియు పల్లపు ప్రాంతాలలో హెక్టార్/50 కిలోలు అవసరము పడతాయి.
5	ప్రధానమైన పొలమును తయారు చేయడము మరియు నాటడము	కొండలు: మట్టిని బాగా తవ్వండి మరియు ఎఫ్వైఎంని ఇంకార్పొరేట్ చేయండి మరియు సరిపడిన సైజులో బెడ్లను నిర్మించండి. పల్లపు ప్రాంతాలు: రెండు సార్లు దున్నిన తరవాత, గట్లు మరియు చాళ్ళు ఏర్పాటు చేయండి.
6	ఖాళీ ఇవ్వడము	కొండలలో, విత్తనాలను (గట్టుకి/2 విత్తనాలు) వరుసగా లేదా బెడ్లలో 30 x 15 cm దూరములో నాటండి. పల్లపు ప్రాంతాల్లో, విత్తనాలను (గట్టుకి/2 విత్తనాలు) గట్టుకి ప్రక్కన 45 x 30 cm దూరములో నాటండి.
7	విత్తే ముందు విత్తనమును శుద్ధి చేయడము	శిలీంధ్రాల వల్ల వచ్చే తెగుళ్ళను కంట్రోలులో వుంచడానికి విత్తనాలను నాటే 24 గంటల ముందు కిలో విత్తనానికి /4 గ్రాముల లెక్కన ట్రికోడెర్మాతో శుద్ధి చేయండి.
8	ఎరువులు మరియు ఫర్టిలైజర్లు	చివరి దుక్కి దున్నిన తరవాత హెక్టార్/25 టన్నుల ఎఫ్వైఎం అప్లై చేయండి. గట్ల యొక్క ఒక ప్రక్కన హెక్టార్/90 కిలోల N మరియు హెక్టార్/125 కిలోల P అప్లై చేయండి
9	నీటి పారుదల షెడ్యూల్	ఇది నాటిన వెంటనే, మూడవ రోజున మరియు అటుతర్వాత వారానికి ఒకసారి చేయాలి.
10	కలుపు మొక్కలు తీయడము/అంతర్గత-కల్టివేషన్	నాటిన తరవాత 20-25 రోజులకి మరియు 40-45 రోజులకి. కలుపు మొక్కలు తొలగించిన ప్రతిసారీ మొక్క చుట్టూ మట్టిని గట్టులా ఎత్తు చేయాలి.
11	సూక్ష్మపోషకము/ఎదుగుదల రెగ్యులేటర్ స్ప్రేలు	
12	చీడ మరియు తెగులు కంట్రోల్	తామర పురుగులు/పేను బంక: ఫ్లోనికామిడ్ 50 % WG (లీటరు/0.5 గ్రాములు) లేదా ఫ్లూబెన్డియామైడ్ 8.33 % + డెల్టామెథ్రిన్ 5.56 % w/w SC (లీటరు/0.5 ml) తెల్ల దోమ: ఇమిడాక్లోప్రిడ్ 30.5% SC (లీటరు/0.5 ml) కాయ తొలచు పురుగు: ఎమామెక్టిన్ బెన్జోయేట్ 5% SG (లీటరు/0.5 గ్రాములు) లేదా క్లోరాన్ట్రానిలిప్రోల్ 18.5% w/w (లీటరు/0.5ml) మొజాయిక్ తెగులు: తెగులుని కంట్రోల్ చేయడానికి ఆశించిన మొక్కలను తొలగించండి మరియు ఇమిడాక్లోప్రిడ్ 30.5% SC (లీటరు/0.5 ml) పిచికారీ చేయండి బూడిద తెగులు: కెబుకొనజోల్ 50% + ట్రిఫ్లోక్సిస్ట్రోబిన్ 25% WG (లీటరుకి 0.5 to 1 గ్రాములు) కాయ కుళ్ళు తెగులు: ఆశించిన మొక్కలు మరియు కాయలను తొలగించండి మరియు కెబుకొనజోల్ 38.39% w/w SC (లీటరు/1.25 ml) పిచికారీ చేయండి. పొలములో తెగులు & చీడల కంట్రోలు మీద అదనపు సమాచారము కొరకు, దయచేసి మీ స్థానిక వ్యవసాయ ఆఫీసర్ను సంప్రదించండి.
13	కోత	60-75 DASలో కాయలు కోతకి సిద్ధముగా వుంటాయి. కాయలు గట్టిగా మరియు లేతగా వున్నప్పుడు కోత కోయాలి, ప్రతి 2 నుంచి 4 రోజులకి కోత కోయాలి. తడిగా వున్న కాయలను కోయకండి.
14	ఎకరానికి/ఆశించే దిగుబడి	సరైన పరిస్థితులలో 90 నుంచి 110 రోజులకి 12-15 టన్నులు/హెక్టరుకి ఆకుపచ్చని కాయలు వస్తాయి.
15	స్టోర్ చేయడము	తాజాగా వున్న చిక్కుడు కాయలు తొందరగా వడులుతాయి. కోత కోసిన తరవాత రెఫ్రిజిరేట్ చేస్తే 7-8 రోజులు షెల్ఫ్ లైఫ్ పెరుగుతుంది.
16	చెయకూడనివి	
17	చేయవలసినవి	
గమనిక	పైన చెప్పబడిన సమాచారము సాధారణ సలహాలు మాత్రమే. ప్రత్యేక ప్రాంతాలకి సంబంధించిన ప్రత్యేకమైన సూచనల కొరకు, దయచేసి మీ రాష్ట్ర స్థానిక వ్యవసాయ శాఖను సంప్రదించండి.	
జాగ్రత్తలు	పంటల ఎదుగుదల మరియు దిగుబడి పలు కారణాల వలన ప్రభావితము అవుతుంది. కాబట్టి, మీ స్థానిక వ్యవసాయ అధికారిని సలహా కొరకు సంప్రదించాలని సూచించడము జరిగింది. కేవలము అధిక-నాణ్యత కలిగిన ఫర్టిలైజర్లు మరియు కీటకనాశనులు మాత్రమే ఉపయోగించబడ్డాయని ధృవీకరించుకోండి. విత్తనాలు, ఫర్టిలైజర్లు మరియు కీటకనాశనుల కొనుగోలు బిల్లులను మీ వద్ద వుంచుకోండి.	

CRYSTAL
Inspiring Growth

I&B Seeds
INDUS SEEDS | SEED & PLANT SCIENCE

புஷ் பீன்ஸ் பயிரிடுதலுக்கான வழிகாட்டுதல்கள் மற்றும் தொழில்நுட்பங்கள்

வாழ்த்துகள்! கிரிஸ்டல் குடும்பத்தில் இருந்து மிகச் சிறந்த புஷ் பீன்ஸ் விதைகளில் ஒன்றைத் தேர்வு செய்துள்ளீர்கள். உயர் தர புஷ் பீன்ஸ் விதைகள் தயாரிப்பில் கிரிஸ்டல் நிறுவனம் மிகச் சிறந்த அனுபவம் கொண்டது. இந்த விதைகள், பரவலான விவசாயக் காலநிலைகளுக்கு பொருந்தும் வகையில், அதிக மகசூல் தரும் கலப்பு தாவரங்களை உருவாக்குவதற்கான பரந்த ஆராய்ச்சியின் விளைவு ஆகும். கிரிஸ்டல், விவசாயிகள் மிக உயர் தரமான விதைகளைப் பெறுவதை உறுதி செய்வதற்காக விதை தயாரிப்பின் போது நவீன தொழில்நுட்பங்களைப் பயன்படுத்துகிறது. கிரிஸ்டலின் புஷ் பீன்ஸ் விதைகள் உயிரி சார் & உயிரி சாரா சூழல்களில் தாக்கு பிடிக்கும் வகையில் மிகச் சிறந்த முளைத்தல் & வலிமை கொண்டவை.

மிகச் சிறந்த மகசூலைப் பெற, சிறந்த விவசாய நடைமுறைகளை மேற்கொள்ளுங்கள். பின்வரும் பொதுவான பரிந்துரைகள் வழங்கப்பட்டுள்ளது. எனவே, ஏதேனும் முடிவுகளை மேற்கொள்ளும் முன் இந்தப் பரிந்துரைகளைப்

கலப்பு புஷ் பீன்ஸ்	குசுமா, லலிதா											
காலம்	100-110 நாட்கள்											
காரீப்	ஆம்											
ராபி	ஆம்											
வசந்த காலம்	ஆம்											
பாசன ஆதாரம்	கால்வாய்/போர்வெல்											

வானிலை சூழல்களைப் பொறுத்து பயிர் வளர்ச்சி & முதிர்ச்சி மாறுபடலாம் என்பதைக் கவனத்தில் கொள்ளுங்கள்

வ.எண்.	விவரங்கள் / செயல்பாடுகள் / செய்முறை	செயல்முறைக்கான விவரங்கள். ஒரு ஏக்கருக்கான உர உள்ளீடு
1	பொருந்துகின்ற பரப்பளவு/விவசாய-காலநிலை மண்டலம்	இந்தியாவில், புஷ் பீன்ஸ்கள் ஆண்டு முழுவதும் வளர்கின்றன. ஆனால், மிதமான வெப்பநிலையில் அவை நன்றாக வளர்கின்றன. எனவே, பகுதியைப் பொறுத்து பருவமழை காலம் (ஜூலை-ஆகஸ்ட்), குளிர்காலம் (அக்டோபர்-நவம்பர்), மற்றும் முன் கோடை காலத்தில் (பிப்ரவரி-மார்ச்) விதைக்கலாம்.
2	நிலம் / மண்	5.5-6.0 pH கொண்ட நீர் தேங்காத பசளை மண் தேவைப்படுகிறது. சாதகமான வெப்பநிலை 15-24°C.
3	பருவம். விதைத்தல்/நாற்று நடுவதற்கான நேரம்	மலை பகுதிகள்: பிப்ரவரி-மார்ச், சமவெளிகள்: அக்டோபர்-நவம்பர்
4	விதை விகிதம். விதைத்தல்/நாற்று நடும் முறை.	விதை வீதம்: மலை பகுதிகளில் ஹெக்டேருக்கு 80 கிலோ மற்றும் சமவெளிகளில் ஹெக்டேருக்கு 50 கிலோவும் தேவைப்படுகிறது.
5	பிரதான நிலம் மற்றும் நாற்று நடுவதற்கான தயாரிப்பு	மலை பகுதிகள்: மண்ணை ஆழமாகத் தோண்டுங்கள் மற்றும் எப்ஒய்எம்-யை போடுங்கள் மற்றும் சௌகரியமான அளவுகளில் படுக்கைகளை அமைத்திடுங்கள். சமவெளிகள்: இரண்டு உழதலுக்குப் பின், மணல் மேடுகள் மற்றும் பள்ளங்களை அமைத்திடுங்கள்.
6	இடைவெளி	மணல் மேட்டு பகுதிகளில், விதைகளை (ஒரு மேடுக்கு 2 விதைகள்) வரிசைகளாகவோ அல்லது 30 x 15 செமீ இடைவெளியில் படுக்கைகளாகவோ அமைத்து விதைத்திடுங்கள். சம வெளி பகுதிகளில், 45 x 30 செமீ இடைவெளி விட்டு மேடுகளின் பக்கங்களில் விதைகளை (ஒரு மேடுக்கு 2 விதைகள்) விதைத்திடுங்கள்.
7	விதைப்பதற்கு முன்பான விதை தயாரிப்பு	பூஞ்சை நோய்களைக் கட்டுப்படுத்த, விதைப்பதற்கு 24 மணி நேரங்களுக்கு முன் விதைகளை டிரைசோடெர்மா (Trichoderma) உடன் ஒரு கிலோ விதைக்கு 4 கிராம் எனும் வீதத்தில் கலக்குங்கள்.
8	எருக்கள் மற்றும் உரங்கள்	கடைசி உழுதலில், ஹெக்டேருக்கு 25 டன்கள் என்று தொழு உரம் (FYM)-யைப் போடுங்கள். மேடுகளின் ஒரு பக்கத்தில், ஹெக்டேருக்கு N 90 கிலோவும் மற்றும் P 125 கிலோவும் போட வேண்டும்.
9	பாசன அட்டவணை	விதைத்த உடனே, மூன்றாம் நாள் மற்றும் ஒரு வாரம் கழித்து மேற்கண்டவற்றை செய்ய வேண்டும்.
10	களை நீக்கம்/ ஊடு பயிரிடுதல்	விதைத்து 20-25 நாட்கள் மற்றும் 40-45 நாட்கள் கழித்து. ஒவ்வொரு களை நீக்கத்திற்கு பின்னும் பயிரைச் சுற்றி மண்ணைக் குவித்திட வேண்டும்.
11	நுண் ஊட்டச்சத்து/வளர்ச்சியை ஒழுங்குபடுத்தும் தெளிப்புகள்	
12	பூச்சி மற்றும் நோய் கட்டுப்பாடு	இலைப்பேன்கள் / செடிப்பேன்கள் : ஃப்ளோனிகாமிட் 50% டபிள்யுஜி (WG) (லிட்டருக்கு 0.5 கிராம்) அல்லது ஃப்ளூபெண்டியாமைடு 8.33 % + டெல்டாமெத்ரின் 5.56 % w/w எஸ்சி (SC) (லிட்டருக்கு 0.5 மிலி) வெள்ளை ஈ: இமிடாக்ளோப்ரிட் 30.5% SC (லிட்டருக்கு 0.5 மிலி) காய் துளைப்பான்: எமாமெக்டின் பென்சோயேட் 5% எஸ்ஜி (SG) (லிட்டருக்கு 0.5 கிராம்) அல்லது குளோரான்ட்ரானிலிப்ரோல் 18.5% w/w (லிட்டருக்கு 0.5 மிலி) மொசைக் நோய்: பாதிக்கப்பட்ட தாவரங்களை அகற்றுங்கள் மற்றும் வெக்டாரைக் கட்டுப்படுத்த இமிடாக்ளோப்ரிட் 30.5% SC (லிட்டருக்கு 0.5 மிலி) தெளியுங்கள் சாம்பல் நோய்: டெபுகோனசோல் 50% + டிரைபிளாக்சிஸ்ட்ரோபின் 25% டபிள்யுஜி (WG) (லிட்டருக்கு 0.5 முதல் 1 கிராம்) ஆந்த்ராக்னோஸ் நோய்: பாதிக்கப்பட்ட தாவரங்கள் மற்றும் காய்களை அகற்றுங்கள் மற்றும் டெபுகோனசோல் 38.39% w/w எஸ்சி (SC) (லிட்டருக்கு 1.25 மிலி) தெளியுங்கள்.
13	அறுவடை	60-70 நாட்களில் காய்கள் அறுவடைக்குத் தயாராகிவிடும். அறுவடை செய்ய, காய்கள் உறுதியாகவும் மென்மையாகவும் இருக்க வேண்டும். மேலும், ஒவ்வொரு 2 முதல் 4 நாட்களுக்கு ஒருமுறை அறுவடை செய்யுங்கள். ஈர காய்களை அறுவடை செய்யாதீர்கள்.
14	ஒரு ஏக்கருக்கு கிடைக்கக்கூடிய மகசூல்	சாதகமான நிலைகளில், 90 முதல் 110 நாட்களில் 12 - 15 டன் பச்சை காய்களைப் பெறலாம்.
15	சேமிப்பகம்	புதிய பீன்ஸ்கள் எளிதில் அழுகும் தன்மை கொண்டவை. அறுவடைக்குப் பின், பீன்ஸை குளிர்சாதனப் பெட்டியில் வைப்பது அதன் அறை வாழ்நாளை 7-8 நாட்கள் அதிகரிக்கலாம்.
16	செய்யக்கூடாதவை	
17	செய்ய வேண்டியவை	

குறிப்பு	மேற்கண்ட தகவல் ஒரு பொதுவான அறிவுறுத்தல். குறிப்பிட்ட பகுதிக்கான தனிப்பட்ட பரிந்துரைகளுக்கு, உங்களது மாநிலத்தில் இருக்கும் உள்ளூர் விவசாயத் துறையைத் தொடர்பு கொள்ளுங்கள்.
முன்னெச்சரிக்கை நடவடிக்கைகள்	பல்வேறு காரணிகளால், பயிர் வளர்ச்சி மற்றும் மகசூல் பாதிக்கப்படலாம். எனவே, ஆலோசனைக்காக உங்கள் உள்ளூர் விவசாய அலுவலரைச் சந்தித்து பேசுவது பரிந்துரைக்கப்படுகிறது. உயர் தர உரங்கள் மற்றும் பூச்சிக்கொல்லிகள் மட்டுமே பயன்படுத்தப்படுகிறது என்பதை உறுதி செய்யுங்கள். விதைகள், உரங்கள் மற்றும் பூச்சிக்கொல்லிகள் வாங்கிய ரசீதுகளைத் தக்க வைத்துக்கொள்ளுங்கள்.

CRYSTAL
Inspiring Growth

I&B Seeds
INDUS SEEDS | SEED PLANT SCIENCE

ਬੁਸ਼ ਬੀਨਜ਼ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਦਾ ਤਰੀਕਾ

ਵਧਾਈਆਂ ਹੋਣ! ਤੁਸੀਂ ਕ੍ਰਿਸਟਲ ਪਰਿਵਾਰ ਵਿੱਚੋਂ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਬੁਸ਼ ਬੀਨਜ਼ ਕਿਸਮਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕ ਬੀਨ ਚੁਣੀ ਹੈ। ਕ੍ਰਿਸਟਲ ਕੰਪਨੀ ਕੋਲ ਉੱਚ ਗੁਣਵੱਤਾ ਵਾਲੇ ਬੁਸ਼ ਬੀਨਜ਼ ਬੀਜ ਪੈਦਾ ਕਰਨ ਦਾ ਭਰਪੂਰ ਤਜਰਬਾ ਹੈ। ਇਹ ਬੀਜ ਵੱਖ -ਵੱਖ ਵਧ ਰਹੇ ਮੌਸਮਾਂ ਲਈ ਵਾਜਬ ਉੱਚ-ਉਪਜ ਦੇਣ ਵਾਲੀਆਂ ਹਾਈਬ੍ਰਿਡ ਫਸਲਾਂ ਬਣਾਉਣ ਦੇ ਉਦੇਸ਼ ਨਾਲ ਵਿਆਪਕ ਖੋਜ ਦਾ ਨਤੀਜਾ ਹਨ। ਕ੍ਰਿਸਟਲ ਬੀਜ ਦੇ ਉਤਪਾਦਨ ਦੌਰਾਨ ਨਵੀਨਤਮ ਤਕਨਾਲੋਜੀ ਅਪਣਾਉਂਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਕਿ ਇਹ ਗੱਲ ਯਕੀਨੀ ਬਣਾਈ ਜਾ ਸਕੇ ਕਿ ਕਿਸਾਨਾਂ ਨੂੰ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਗੁਣਵੱਤਾ ਵਾਲੇ ਬੀਜ ਮਿਲ ਸਕਣ। ਕ੍ਰਿਸਟਲ ਬੁਸ਼ ਬੀਨ ਦੇ ਬੀਜ ਜੈਵਿਕ ਅਤੇ ਅਜੈਵਿਕ ਤਣਾਅ ਪ੍ਰਤੀ ਸਹਿਣਸ਼ੀਲਤਾ ਦੇ ਨਾਲ -ਨਾਲ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਵਿਕਾਸ ਅਤੇ ਚੰਗੀ ਸ਼ਕਤੀ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦੇ ਹਨ।
ਚੰਗੀ ਪੈਦਾਵਾਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ ਕਿਰਪਾ ਕਰਕੇ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਖੇਤੀ ਅਭਿਆਸਾਂ ਦਾ ਪਾਲਣ ਕਰੋ। ਹੇਠਾਂ ਕੁਝ ਆਮ ਸੁਝਾਅ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਹਨ , ਇਸ ਲਈ ਅਸੀਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਬੇਨਤੀ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਕੋਈ ਵੀ ਫੈਸਲਾ ਲੈਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹੋ।

ਹਾਈਬ੍ਰਿਡ ਬੁਸ਼ ਬੀਨਜ਼	ਕੁਸੁਮਾ' ਲਲਿਤਾ
ਮਿਆਦ	100-110 ਦਿਨ
ਝਰੀਫ	ਹਾਂ
ਰਬੀ	ਹਾਂ
ਸਪ੍ਰਿੰਗ	ਹਾਂ
ਸਿੰਚਾਈ ਦਾ ਸਰੋਤ	ਨਹਿਰ/ਬੋਰਵੈੱਲ

ਕਿਰਪਾ ਕਰਕੇ ਧਿਆਨ ਦਿਓ ਕਿ ਫਸਲ ਦਾ ਵਾਧਾ ਅਤੇ ਪਰਿਪੱਕਤਾ ਮੌਸਮ ਦੇ ਆਧਾਰ 'ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਸੀਰੀਅਲ ਨੰ.	ਵੇਰਵੇ/ਕਾਰਜ/ਅਭਿਆਸ	ਕੰਮਕਾਜ ਦੇ ਵੇਰਵੇ। ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਇਨਪੁਟ
1	ਖੇਤੀਬਾੜੀ-ਜਲਵਾਯੂ ਖੇਤਰ ਅਤੇ ਸਥਾਨ ਦੀ ਅਨੁਕੂਲਤਾ	ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਝਾੜੀਆਂ ਦੇ ਬੀਜ ਸਾਲ ਭਰ ਉਗਾਏ ਜਾ ਸਕਦੇ ਹਨ, ਪਰ ਇਹ ਚੰਗੀ ਮੌਸਮੀ ਸਥਿਤੀਆਂ ਵਿੱਚ ਵਧਦੇ-ਫੁੱਲਦੇ ਹਨ, ਇਸ ਲਈ ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਖੇਤਰ ਦੇ ਆਧਾਰ 'ਤੇ ਮਾਨਸੂਨ (ਜੁਲਾਈ-ਅਗਸਤ), ਸਰਦੀਆਂ (ਅਕਤੂਬਰ-ਨਵੰਬਰ), ਅਤੇ ਗਰਮੀਆਂ ਦੇ ਸ਼ੁਰੂ (ਫਰਵਰੀ-ਮਾਰਚ) ਦੌਰਾਨ ਬੀਜਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।
2	ਜ਼ਮੀਨ / ਮਿੱਟੀ	5.5-6.0 pH ਵਾਲੀ ਚੰਗੀ ਨਿਕਾਸ ਵਾਲੀ ਦੋਮਟ ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਬਿਹਤਰੀਨ ਤਾਪਮਾਨ 15-24°C ਹੈ।
3	ਮੌਸਮ। ਬਿਜਾਈ/ਲਗਾਉਣ ਦਾ ਸਮਾਂ	ਪਹਾੜੀਆਂ: ਫਰਵਰੀ-ਮਾਰਚ, ਮੈਦਾਨੀ: ਅਕਤੂਬਰ-ਨਵੰਬਰ
4	ਬੀਜ ਦੀ ਦਰ। ਬਿਜਾਈ/ਲਾਉਣ ਦਾ ਤਰੀਕਾ।	ਬੀਜ ਦੀ ਮਾਤਰਾ: ਪਹਾੜੀ ਇਲਾਕਿਆਂ ਲਈ ਲਗਭਗ 80 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ/ਹੈਕਟਰ ਅਤੇ ਮੈਦਾਨੀ ਇਲਾਕਿਆਂ ਲਈ 50 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ/ਹੈਕਟਰ ਬੀਜ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।
5	ਮੁੱਖ ਖੇਤ ਦੀ ਤਿਆਰੀ ਅਤੇ ਬਿਜਾਈ	ਪਹਾੜੀਆਂ: ਮਿੱਟੀ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪੁੱਟ ਕੇ ਉਸ ਵਿੱਚ ਰੂੜੀ ਦੀ ਖਾਦ ਪਾਓ ਅਤੇ ਸਹੀ ਆਕਾਰ ਦੀਆਂ ਪਹਾੜੀਆਂ ਬਣਾਓ। ਮੈਦਾਨ: ਦੋ ਵਾਰ ਵਾਹੁਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ, ਵੱਟਾਂ ਅਤੇ ਖੱਡਾਂ ਬਣਾਓ।
6	ਬੂਟਿਆਂ ਵਿਚਕਾਰ ਦੂਰੀ	ਬੀਜਾਂ ਨੂੰ ਪਹਾੜੀਆਂ, ਕਤਾਰਾਂ (2 ਬੀਜ/ਪਹਾੜੀ) ਜਾਂ ਕਿਆਰੀਆਂ ਵਿੱਚ 30 x 15 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਦੀ ਦੂਰੀ 'ਤੇ ਬੀਜੋ। ਮੈਦਾਨੀ ਇਲਾਕਿਆਂ ਵਿੱਚ, 45 x 30 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਦੀ ਦੂਰੀ 'ਤੇ ਵੱਟਾਂ ਦੇ ਕਿਨਾਰਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਬੀਜ (2 ਬੀਜ/ਪਹਾੜੀ) ਬੀਜੋ।
7	ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਬੀਜ ਦਾ ਉਪਚਾਰ	ਫੰਗਲ ਰੋਗਾਂ ਨੂੰ ਕੰਟਰੋਲ ਕਰਨ ਲਈ, ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ 24 ਘੰਟੇ ਪਹਿਲਾਂ ਬੀਜਾਂ ਦਾ ਟ੍ਰਾਈਕੋਡਰਮਾ 4 ਗ੍ਰਾਮ/ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜ ਨਾਲ ਉਪਚਾਰ ਕਰੋ।
8	ਜੈਵਿਕ ਅਤੇ ਰਸਾਇਣਕ ਖਾਦ	ਆਖਰੀ ਵਾਹੀ ਵੇਲੇ ਰੂੜੀ ਦੀ ਖਾਦ 25 ਟਨ/ਹੈਕਟੇਅਰ ਪਾਓ। ਵੱਟਾਂ ਦੇ ਇੱਕ ਪਾਸੇ 90 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ/ਹੈਕਟੇਅਰ ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ ਅਤੇ 125 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ/ਹੈਕਟੇਅਰ ਫਾਸਫੋਰਸ ਪਾਓ।
9	ਸਿੰਚਾਈ ਦੀ ਸਮਾਂ-ਸਾਰਣੀ	ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ ਤੁਰੰਤ ਬਾਅਦ, ਤੀਜੇ ਦਿਨ ਅਤੇ ਉਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਹਫ਼ਤੇ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਵਾਰ।
10	ਨਦੀਨਾਂ ਦੀ ਕਟਾਈ ਅਤੇ ਫ਼ਸਲਾਂ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ	ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ 20-25 ਦਿਨ ਅਤੇ 40-45 ਦਿਨ ਬਾਅਦ। ਹਰੇਕ ਗੇੜੀ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਬੂਟਿਆਂ ਦੇ ਆਲੇ-ਦੁਆਲੇ ਮਿੱਟੀ ਪਾਓ।
11	ਪੌਸ਼ਟਿਕ ਤੱਤਾਂ/ਵਿਕਾਸ ਰੈਗੂਲੇਟਰਾਂ ਦਾ ਛਿੜਕਾਅ	
12	ਕੀਟ ਅਤੇ ਰੋਗ ਨਿਯੰਤਰਣ	ਥ੍ਰਿਪਸ/ਐਫਿਡਜ਼: ਫਲੋਨੀਕਾਮਿਡ 50% WG (0.5 ਗ੍ਰਾਮ/ਲੀਟਰ) ਜਾਂ ਫਲੂਬੈਂਡੀਅਮਾਈਡ 8.33% + ਡੈਲਟਾਮੇਥਰਿਨ 5.56% % w/w SC (0.5 ਮਿ.ਲੀ./ਲੀਟਰ) ਚਿੱਟੀ ਮੱਖੀ: ਇਮੀਡਾਕਲੋਪ੍ਰਿਡ 30.5% SC (0.5 ਮਿ.ਲੀ./ਲੀਟਰ) ਪੌਡ ਬੋਰਰ: ਐਮਾਮੇਕਟਿਨ ਬੈਂਜੋਏਟ 5% SG (0.5 ਗ੍ਰਾਮ/ਲੀਟਰ) ਜਾਂ ਕਲੋਰੈਂਟ੍ਰਾਨਿਲੀਪ੍ਰੋਲ 18.5% w/w (0.5 ਮਿ.ਲੀ./ਲੀਟਰ) ਮੋਜ਼ੇਕ: ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਬੂਟਿਆਂ ਨੂੰ ਹਟਾਓ ਅਤੇ ਵੈਕਟਰ ਨੂੰ ਕੰਟਰੋਲ ਕਰਨ ਲਈ ਇਮੀਡਾਕਲੋਪ੍ਰਿਡ 30.5% SC (0.5 ਮਿ.ਲੀ./ਲੀਟਰ) ਦਾ ਛਿੜਕਾਅ ਕਰੋ। ਪਾਊਡਰੀ ਫ਼ਫ਼ੂੰਦੀ: ਟੈਬੂਕੋਨਾਜ਼ੋਲ 50% + ਟ੍ਰਾਈਫਲੋਕਸੀਸਟ੍ਰੋਬਿਨ 25% WG (0.5 ਤੋਂ 1 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ) ਐਂਥ੍ਰੈਕਨੋਜ਼: ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਬੂਟਿਆਂ ਅਤੇ ਫਲੀਆਂ ਨੂੰ ਕੱਢੋ ਅਤੇ ਟੈਬੂਕੋਨਾਜ਼ੋਲ 38.39% w/w SC (1.25 ਮਿ.ਲੀ. ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ) ਦਾ ਛਿੜਕਾਅ ਕਰੋ। ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਬਿਮਾਰੀ ਅਤੇ ਨਿਯੰਤਰਣ ਬਾਰੇ ਵਧੇਰੇ ਜਾਣਕਾਰੀ ਲਈ, ਕਿਰਪਾ ਕਰਕੇ ਆਪਣੇ ਸਥਾਨਕ ਖੇਤੀਬਾੜੀ ਅਧਿਕਾਰੀ ਦੀ ਸਲਾਹ ਲਓ।
13	ਵਾਢੀ	ਫਲੀਆਂ 60-75 ਦਿਨ ਵਿੱਚ ਵਾਢੀ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹੋ ਜਾਣਗੀਆਂ। ਫਲੀਆਂ ਕਟਾਈ ਲਈ ਸਖ਼ਤ ਅਤੇ ਨਰਮ ਹੋਣੀਆਂ ਚਾਹੀਦੀਆਂ ਹਨ, ਅਤੇ ਹਰ 2 ਤੋਂ 4 ਦਿਨਾਂ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਵਾਰ ਕਟਾਈ ਕਰੋ। ਗਿੱਲੀਆਂ ਫਲੀਆਂ ਦੀ ਕਟਾਈ ਨਾ ਕਰੋ।
14	ਅਨੁਮਾਨਿਤ ਝਾੜ/ਏਕੜ	ਆਦਰਸ਼ ਹਾਲਤਾਂ ਵਿੱਚ, ਹਰੀ ਫਲੀਆਂ ਦੀ ਪੈਦਾਵਾਰ 90-110 ਦਿਨਾਂ ਵਿੱਚ 12-15 ਟਨ/ਹੈਕਟੇਅਰ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।
15	ਸਟੋਰੇਜ	ਤਾਜ਼ੀਆਂ ਫਲੀਆਂ ਜਲਦੀ ਖਰਾਬ ਹੋ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਕਟਾਈ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਫਰਿੱਜ ਵਿੱਚ ਰੱਖਣ ਨਾਲ ਸ਼ੈਲਫ ਲਾਈਫ 7-8 ਦਿਨਾਂ ਤੱਕ ਵਧ ਸਕਦੀ ਹੈ।
16	ਕੀ ਨਾ ਕਰੋ	
17	ਕੀ ਕਰੋ	
ਨੋਟ	ਇਹ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਿਰਫ਼ ਆਮ ਜਾਣਕਾਰੀ ਲਈ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਖਾਸ ਖੇਤਰ ਲਈ ਖਾਸ ਸਿਫ਼ਾਰਸ਼ਾਂ ਲਈ, ਕਿਰਪਾ ਕਰਕੇ ਆਪਣੇ ਸਥਾਨਕ ਰਾਜ ਦੇ ਖੇਤੀਬਾੜੀ ਵਿਭਾਗ ਨਾਲ ਸੰਪਰਕ ਕਰੋ।	
ਸਾਵਧਾਨੀਆਂ	ਕਈ ਕਾਰਨਾਂ ਕਰਕੇ ਫਸਲਾਂ ਦਾ ਵਾਧਾ ਅਤੇ ਝਾੜ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ, ਸਲਾਹ ਲਈ ਆਪਣੇ ਸਥਾਨਕ ਖੇਤੀਬਾੜੀ ਅਧਿਕਾਰੀ ਨਾਲ ਗੱਲ ਕਰਨ ਦੀ ਸਲਾਹ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਯਕੀਨੀ ਬਣਾਓ ਕਿ ਸਿਰਫ਼ ਚੰਗੀ ਕੁਆਲਿਟੀ ਦੀਆਂ ਖਾਦਾਂ ਅਤੇ ਕੀਟਨਾਸ਼ਕਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ। ਬੀਜ, ਖਾਦ ਅਤੇ ਕੀਟਨਾਸ਼ਕਾਂ ਦੀ ਖਰੀਦ ਦੇ ਬਿੱਲਾਂ ਨੂੰ ਸੰਭਾਲ ਕੇ ਰੱਖੋ।	

CRYSTAL
Inspiring Growth

I&B Seeds
INDUS SEEDS | SEED PLANT SCIENCE

বরবটি চাষের নিয়মাবলি

অভিনন্দন! আপনি ক্রিস্টাল পরিবারের অন্যতম উৎকৃষ্ট বরবটির বীজগুলি নির্বাচন করেছেন। উচ্চমানের বরবটি বীজগুলি উৎপাদনে ক্রিস্টালের নির্ভরযোগ্য অভিজ্ঞতা আছে। এই বীজগুলি ব্যাপক গবেষণার ফলাফল, যার উদ্দেশ্য বিভিন্ন কৃষি জলবায়ুর উপযোগী, উচ্চফলনশীল হাইব্রিড ফসলের উন্নয়ন। কৃষকেরা যাতে সর্বোচ্চ মানের বীজগুলি পান তা নিশ্চিত করতে উৎপাদনের সময় ক্রিস্টাল সর্বাধুনিক প্রযুক্তিগুলি গ্রহণ করে। ক্রিস্টালের বরবটি বীজগুলি জীবজ এবং অজীবজ প্রতিকূলতার প্রতি সহনশীলতা সহ উৎকৃষ্ট অঙ্কুরোদ্গম এবং শক্তিশালী উদ্ভিদের বিকাশ প্রদান করে।

অনুগ্রহ করে চমৎকার ফলন পেতে সর্বোত্তম কৃষি পদ্ধতি গ্রহণ করুন। নিচে কিছু সাধারণ পরামর্শ দেওয়া হল, তাই আমরা আপনাকে বলছি অনুগ্রহ করে কোনো সিদ্ধান্ত নেওয়ার আগে পরামর্শগুলি পড়ুন।

হাইব্রিড বরবটি	কুসুমা, ললিতা											
সময়সীমা	100-110 দিন											
খরিফ	হ্যাঁ											
রবি	হ্যাঁ											
বসন্ত	হ্যাঁ											
সেচের উৎস	না/ বোরওয়েল											

অনুগ্রহ করে মনে রাখবেন যে আবহাওয়ার পরিস্থিতি অনুযায়ী ফসলের বিকাশ ও পক্কতা আসার সময় ভিন্ন হতে পারে

ক্রমিক নম্বর	বিস্তারিত/ অপারেশন/ পদ্ধতি	প্রতি একর ইনপুটে অপারেশনের বিশদ
1	এলাকার উপযোগিতা/কৃষি-জলবায়ু জোন	ভারতে বরবটি সারা বছর চাষ করা যায়, কিন্তু মাঝারি আবহাওয়ায় সেগুলোর ফলন ভালো হয়, তাই অঞ্চলভেদে বর্ষাকালে (জুলাই-আগষ্ট), শীতকালে (অক্টোবর-নভেম্বর), এবং গ্রীষ্মকালের শুরুতে (ফেব্রুয়ারি-মার্চ) বপন করা নির্ভর করে।
2	জমি / মাটি	5.5-6.0 pH মান সহ ভালো নিষ্কাশনযুক্ত দোঁআশ মাটি প্রয়োজন। আদর্শ তাপমাত্রা15- 24°সেন্টিগ্রেড।
3	ঋতু। বপন/রোপণের সময়	পাহাড়: ফেব্রুয়ারি-মার্চ, সমতল: অক্টোবর-নভেম্বর
4	বীজের হার। বপন/রোপণের পদ্ধতি।	বীজের হার: পাহাড়ের জন্য প্রায় 80 কেজি/হেক্টর এবং সমতলের জন্য 50 কেজি/হেক্টর প্রয়োজন।
5	মূল ক্ষেতের প্রস্তুতি এবং রোপণ	পাহাড়: মাটি ভালোভাবে চাষ করে তাতে পচা FYM মিশিয়ে সুবিধাজনক আকারের বেড তৈরি করতে হবে। সমতল: দুইবার চাষের পর, রিজ এবং ফারো তৈরি করতে হবে।
6	ফাঁক	পাহড়ে, 30 x 15 সেন্টিমিটার দূরত্বে সারি অথবা বেডে প্রতি গর্তে (2টি বীজ/পাহাড়) বপন করতে হবে। সমতলে, 45 x 30 সেন্টিমিটার দূরত্বে রিজের পাশে প্রতি গর্তে (2টি বীজ/পাহাড়) বপন করতে হবে।
7	বপনের আগে বীজের পরিচর্যা	বীজ বপনের 24 ঘণ্টা আগে বীজে 4 গ্রাম/ কেজি ট্রাইকোডার্মা দিয়ে বীজ প্রাক্রয়াজাত করতে হবে যাতে ছত্রাকজনত রোগ নিয়ন্ত্রণ করা যায়।
8	জৈব এবং রাসায়নিক সার	শেষ চাষের সময় 25 t/হেক্টর FYM প্রয়োগ করুন। 90 তে N এবং 125 কোজ/হেক্টরে P রিজের একপাশে প্রয়োগ করতে হবে
9	সেচের সময়সূচী	বপনের ঠিক পরেই, তৃতীয় দিনে এবং তারপর প্রতি সপ্তাহে একবার।
10	আগাছা নিবারণ/ মধ্যশস্য পরিচর্যা	বপনের 20 – 25 দিন এবং 40 – 45 দিন পর। প্রতিটি আগাছা নিবারণের পর ফসলের চারপাশে মাটি চাপা দিতে হবে।
11	ক্ষুদ্রপুষ্টি/বিকাশ নিয়ন্ত্রক ছিটান	
12	পোকা এবং রোগ নিয়ন্ত্রণ	থ্রিপস /এফিডস : ফ্লোনিকামিড 50 % WG (0.5 গ্রাম/লিটার) অথবা ফ্লুবেনডিয়ামাইড 8.33 % + ডেল্টামেথ্রিন 5.56 % w/w SC (0.5 মিলিলিটার/লিটার) সাদা মাছি: ইমিডাক্লোপ্রিড 30.5% SC (0.5 মিলিলিটার/লিটার) পড বোরর: ইমামেকটিন বেনজোয়াট 5% SG (0.5 গ্রাম/লিটার) অথবা ক্লোরানট্রানিলিপ্রোল 18.5% w/w (0.5মিলিলিটার/লিটার) মোসাইক: আক্রান্ত উদ্ভিদগুলো সরিয়ে ফেলুন এবং ভেক্টর নিয়ন্ত্রণ করতে ইমিডাক্লোপ্রিড 30.5% SC (0.5 মিলিলিটার/লিটার) ছিটান পাউডারি মিলডিউ: টেবুকোনাজোল 50% + ট্রিফ্লোক্সিস্ট্রোবিন 25% WG (0.5 থেকে 1 গ্রাম প্রতি লিটার) অ্যানথ্রাকনোস: আক্রান্ত উদ্ভিদ এবং ফল সরিয়ে ফেলুন এবং টেবুকোনাজোল 38.39% w/w SC (1.25 মিলিলিটার
13	ফসল কাটা	60-75 DAS তে ফসল কাটার জন্য পডগুলি প্রস্তুত হবে। পডগুলি ফসল কাটার জন্য শক্ত এবং কোমল হওয়া উচিং এবং প্রতি 2 থেকে 4 দিনে একবার ফসল কাটা উচিং। ভজো পডগুলরি ফসল কাটা এড়য়িে চলুন।
14	প্রত্যাশিত ফলন/ একর	সবুজ পডগুলির আদর্শ অবস্থায় 90 থেকে 110 দিনে 12 - 15 t/হেক্টর।
15	সংরক্ষণ	তাজা খাওয়ার জন্য বরবটি দ্রুত নষ্ট হয়ে যায়। ফসল কাটা হলে ফ্রিজে রাখলে এর স্থায়িত্বকাল 7-8 দিন পর্যন্ত বাড়ানো যায়।
16	করবেন না	
17	করবেন	
দ্রষ্টব্য	উপরের তথ্যটি একটি সাধারণ পরামর্শ। নির্দিষ্ট এলাকার জন্য বিশেষ সুপারিশের জন্য, অনুগ্রহ করে স্থানীয় রাজ্য কৃষি দপ্তরের সঙ্গে যোগাযোগ করুন।	
সতর্কতা	ফসলের বিকাশ এবং ফলন বিভিন্ন উপাদানের দ্বারা প্রভাবিত হতে পারে। অতএব, পরামর্শের জন্য আপনার স্থানীয় কৃষি অফিসারের সঙ্গে যোগাযোগ করা	

ଶିମ୍ ଅଭ୍ୟାସର ପ୍ୟାକେଜ୍

ଅଭିନନ୍ଦନ! ଆପଣ କ୍ରିଷ୍ଟାଲ୍ ପରିବାରରୁ ସବୁଠାରୁ ଭଲ ଶିମ୍ ବିହନ ମଧ୍ୟରୁ ଗୋଟିଏ ବାଛିଛନ୍ତି। କ୍ରିଷ୍ଟାଲର ଉଚ୍ଚମାନର ଶିମ୍ ବିହନ ଉତ୍ପାଦନ କରିବାରେ ଦୃଢ଼ ଅଭିଜ୍ଞତା ଅଛି। ଏହି ବିହନଗୁଡ଼ିକ ବ୍ୟାପକ ଗବେଷଣାର ଫଳାଫଳ, ଯାହାର ଲକ୍ଷ୍ୟ ବିଭିନ୍ନ କୃଷି ଜଳବାୟୁ ପାଇଁ ଉପଯୁକ୍ତ ଉଚ୍ଚ-ଅମଳକ୍ଷମ ହାଇବ୍ରିଡ୍ ଫସଲ ବିକଶିତ କରିବା ଅଟେ। ଚାଷୀମାନେ ସର୍ବୋଚ୍ଚ ଗୁଣବତ୍ତାର ବିହନ ପାଇବା ନିଶ୍ଚିତ କରିବା ପାଇଁ କ୍ରିଷ୍ଟାଲ୍ ବିହନ ଉତ୍ପାଦନ ସମୟରେ ନୂତନତମ ପ୍ରଯୁକ୍ତିବିଦ୍ୟା ଗ୍ରହଣ କରେ। କ୍ରିଷ୍ଟାଲ୍‌ର ଶିମ୍ ବିହନ ଜୈବିକ୍ ଏବଂ ଅଜୈବିକ ଚାପ ପ୍ରତି ସହନଶୀଳତା ସହିତ ଉତ୍କୃଷ୍ଟ ଅଙ୍କୁରୀକରଣ ଏବଂ ଉତ୍ତମ ଶକ୍ତି ପ୍ରଦାନ କରେ।
ଉତ୍କୃଷ୍ଟ ଅମଳ ପାଇବା ପାଇଁ ଦୟାକରି ସର୍ବୋତ୍ତମ କୃଷି ପଦ୍ଧତି ଗ୍ରହଣ କରନ୍ତୁ। ନିମ୍ନଲିଖିତ ସାଧାରଣ ସୁପାରିଶଗୁଡ଼ିକ ପ୍ରଦାନ କରାଯାଇଛି, ତେଣୁ କୌଣସି ନିଷ୍ପତ୍ତି ନେବା ପୂର୍ବରୁ ଏହି ସୁପାରିଶଗୁଡ଼ିକୁ ପଢ଼ି ନେବାକୁ ଆମେ ଆପଣଙ୍କୁ ଅନୁରୋଧ କରୁଛୁ।

ଶିମ୍ ହାଇବ୍ରିଡ୍	କୁସୁମ୍, ଲଳିତା											
ଅବଧି	100-110 ଦିନ											
ଖରିପ	ହଁ											
ରବି	ହଁ											
ବସନ୍ତ	ହଁ											
ଜଳସେଚନର ଉତ୍ସ	ନାଳ/ ବୋରୱେଲ											

ଦୟାକରି ଧ୍ୟାନ ଦିଅନ୍ତୁ ଯେ ପାଣିପାଗ ପରିସ୍ଥିତି ଅନୁସାରେ ଫସଲର ବୃଦ୍ଧି ଏବଂ ପରିପକ୍ୱତା ଭିନ୍ନ ହୋଇପାରେ।

କ୍ରମିକ ସଂଖ୍ୟା	ବିବରଣୀ / କାର୍ଯ୍ୟ / ଅଭ୍ୟାସ	କାର୍ଯ୍ୟର ବିବରଣୀ। ପ୍ରତି ଏକର ଇନପୁଟ୍
1	କ୍ଷେତ୍ର/କୃଷି-ଜଳବାୟୁ କ୍ଷେତ୍ରର ଉପଯୁକ୍ତତା	ଭାରତରେ ବର୍ଷସାରା ଶିମ୍ ଚାଷ କରାଯାଇପାରିବ, କିନ୍ତୁ ଏହା ମଧ୍ୟମ ପାଣିପାଗରେ ଭଲ ଫଳ ଦିଏ, ତେଣୁ ଅଞ୍ଚଳ ଉପରେ ନିର୍ଭର କରି ମୌସୁମୀ (ଜୁଲାଇ-ଅଗଷ୍ଟ), ଶୀତ (ଅକ୍ଟୋବର-ନଭେମ୍ବର) ଏବଂ ଗ୍ରୀଷ୍ମ ଋତୁର ଆରମ୍ଭରେ (ଫେବୃଆରୀ-ମାର୍ଚ୍ଚ) ବୁଣାଯାଏ।
2	ଭୂମି / ମାଟି	5.5-6.0 ପିଏଚ୍ ପରିସର ସହିତ ଭଲ ଜଳ ନିଷ୍କାସନ ଦୋରସା ମାଟି ଆବଶ୍ୟକ। ସର୍ବୋତ୍ତମ ତାପମାତ୍ରା ହେଉଛି 15-24° ସେଲସିୟସ୍।
3	ଋତୁ ବୁଣିବା/ରୋପଣ ସମୟ	ପାହାଡିଆ ଅଞ୍ଚଳ: ଫେବୃଆରୀ – ମାର୍ଚ୍ଚ, ସମତଳ ଅଞ୍ଚଳ: ଅକ୍ଟୋବର – ନଭେମ୍ବର
4	ବିହନ ହାର ବୁଣିବା/ରୋପଣ ପଦ୍ଧତି	ବିହନ ହାର: ପାହାଡିଆ ଅଞ୍ଚଳ ପାଇଁ ପ୍ରାୟ 80 କିଲୋଗ୍ରାମ/ହେକ୍ଟର ଏବଂ ସମତଳ ପାଇଁ 50 କିଲୋଗ୍ରାମ/ହେକ୍ଟର ଆବଶ୍ୟକ।
5	ମୁଖ୍ୟ କ୍ଷେତ ପ୍ରସ୍ତୁତି ଏବଂ ରୋପଣ	ପାହାଡିଆ ଅଞ୍ଚଳ: ମାଟିକୁ ଭଲ ଭାବରେ ଖୋଳି ସେଥିରେ ଗୋବର ଖତ ମିଶାନ୍ତୁ ଏବଂ ସୁବିଧାଜନକ ଆକାରର ଶଯ୍ୟା ତିଆରି କରନ୍ତୁ। ସମତଳ ଅଞ୍ଚଳ: ଦୁଇଟି ହଳ କରିବା ପରେ, ଧାର ଏବଂ ଖାଲ ତିଆରି କରନ୍ତୁ।
6	ବ୍ୟବଧାନ	ପାହାଡିଆ ଅଞ୍ଚଳରେ, ଧାଡ଼ିରେ କିମ୍ବା ଶଯ୍ୟାରେ 30 x 15 ସେମି ବ୍ୟବଧାନରେ ବିହନ (2 ବିହନ/ହିଲ୍ସ) ବୁଣନ୍ତୁ। ସମତଳ ଅଞ୍ଚଳରେ, ଧାରଗୁଡ଼ିକର ପାର୍ଶ୍ୱରେ 45 x 30 ସେମି ବ୍ୟବଧାନରେ ବିହନ (2 ବିହନ/ହିଲ୍ସ) ବୁଣନ୍ତୁ।
7	ବୁଣିବା ପୂର୍ବରୁ ବିହନ ଉପଚାର	କବକ ରୋଗ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ ପାଇଁ ବୁଣିବାର 24 ଘଣ୍ଟା ପୂର୍ବରୁ ବିହନକୁ 4 ଗ୍ରାମ/କିଲୋଗ୍ରାମ ଟ୍ରାଇକୋଡର୍ମା ସହିତ ବିହନ ବିଶୋଧନ କରନ୍ତୁ।
8	ଖତ ଏବଂ ସାର	ଶେଷ ହଳ ସମୟରେ ହେକ୍ଟର ପ୍ରତି ଏଫ.ୱାଇ.ଏମ୍ 25 ଟନ୍ ପ୍ରୟୋଗ କରନ୍ତୁ। ଧାରଗୁଡ଼ିକର ଗୋଟିଏ ପାର୍ଶ୍ୱରେ ହେକ୍ଟର ପ୍ରତି 90 କିଲୋଗ୍ରାମର ନାଇଟ୍ରୋଜେନ୍ ଏବଂ 125 କିଲୋଗ୍ରାମର ଫସଫରସ ପ୍ରୟୋଗ କରାଯିବା ଉଚିତ।
9	ଜଳସେଚନ ସମୟସୂଚୀ	ବୁଣିବା ପରେ ତୁରନ୍ତ, ତୃତୀୟ ଦିନ ଏବଂ ତା'ପରେ ସପ୍ତାହରେ ଥରେ।
10	ଘାସ ବାଛିବା/ଆନ୍ତଃ-ଚାଷ	ବୁଣିବାର 20-25 ଦିନ ଏବଂ 40-45 ଦିନ ପରେ। ପ୍ରତ୍ୟେକ ଥର ଘାସ କାଟିବା ପରେ ଫସଲ ତଳଭାଗରେ ମାଟି ଚଢ଼ାଇ ଦେବା ଉଚିତ।
11	ସୂକ୍ଷ୍ମ ପୋଷକ ତତ୍ତ୍ୱ/ବୃଦ୍ଧି ନିୟାମକ ସିଞ୍ଚନ	
12	ରୋଗ ଓ କୀଟପତଙ୍ଗ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ	ଥ୍ରିପ୍ସ / ଏଫଡ୍ସ: ଫ୍ଲୋନିକାମିଡ୍ 50% ଡବ୍ଲ୍ୟୁଜି (WG) (0.5 ଗ୍ରାମ/ଲିଟର) କିମ୍ବା ଫ୍ଲୁବେଣ୍ଡିଆମାଇଡ୍ 8.33% + ଡେଲ୍ଟାମେଥ୍ରିନ୍ 5.56% ଡବ୍ଲ୍ୟୁ/ଡବ୍ଲ୍ୟୁ (w/w) ଏସସି (SC) (0.5 ମିଲି/ଲିଟର) ଧଳାମାଛି: ଇମିଡାକ୍ଲୋପ୍ରିଡ୍ 30.5% ଏସସି (SC) (0.5 ମିଲି/ଲିଟର) ପଡ୍ ବୋରୋର: ଏମାମେକ୍ଟିନ୍ ବେଞ୍ଜୋଏଟ୍ 5% ଏସଜି (SG)(0.5 ଗ୍ରାମ/ଲିଟର) କିମ୍ବା କ୍ଲୋରାଣ୍ଟ୍ରାନିଲିପ୍ରୋଲ୍ 18.5% ଡବ୍ଲ୍ୟୁ/ଡବ୍ଲ୍ୟୁ (w/w) (0.5 ମିଲି/ଲିଟର) ମୋଜାଇକ୍: ପ୍ରଭାବିତ ଗଛଗୁଡ଼ିକୁ ବାହାର କରିଦିଅନ୍ତୁ ଏବଂ ଭେକ୍ଟର ନିୟନ୍ତ୍ରଣ ପାଇଁ ଇମିଡାକ୍ଲୋପ୍ରିଡ୍ 30.5% ଏସସି (SC) (0.5 ମିଲି/ଲିଟର) ସିଞ୍ଚନ କରନ୍ତୁ। ପାଉଡ୍ରି ମିଲଡ୍ୟୁ: ଟେବୁକୋନାଜୋଲ 50% + ଟ୍ରାଇଫ୍ଲୋକ୍ସିଷ୍ଟ୍ରୋବିନ 25% ଡବ୍ଲ୍ୟୁଜି (WG) (ପ୍ରତି ଲିଟର 0.5 ରୁ 1 ଗ୍ରାମ) ଆନ୍ଥ୍ରାକନୋଜ୍: ପ୍ରଭାବିତ ଗଛ ଏବଂ ଫଳଗୁଡ଼ିକୁ ବାହାର କରି ଟେବୁକୋନାଜୋଲ 38.39% ଡବ୍ଲ୍ୟୁ/ଡବ୍ଲ୍ୟୁ ଏସସି (w/w SC) (ପ୍ରତି ଲିଟରରେ 1.25 ମିଲି) ସିଞ୍ଚନ କରନ୍ତୁ। କ୍ଷେତରେ ରୋଗ ଏବଂ କୀଟପତଙ୍ଗ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ ବିଷୟରେ ଅଧିକ ସୂଚନା ପାଇଁ, ଦୟାକରି ଆପଣଙ୍କର ସ୍ଥାନୀୟ କୃଷି ଅଧିକାରୀଙ୍କ ସହିତ ପରାମର୍ଶ କରନ୍ତୁ।
13	ଅମଳ	60-75 ଦିନ ମଧ୍ୟରେ ଫଳଗୁଡ଼ିକ ଅମଳ ପାଇଁ ପ୍ରସ୍ତୁତ ହୋଇଯିବ। ଫସଲ କାଟିବା ପାଇଁ ଫଳଗୁଡ଼ିକ ମଜବୁତ ଏବଂ କୋମଳ ହେବା ଉଚିତ, ଏବଂ ପ୍ରତି 2 ରୁ 4 ଦିନରେ ଥରେ ଅମଳ କରନ୍ତୁ। ଓଦା ଫଳଗୁଡ଼ିକୁ ଅମଳ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ।
14	ଆଶାକରାଯାଉଥିବା ଅମଳ/ଏକର	ଆଦର୍ଶ ପରିସ୍ଥିତିରେ 90 ରୁ 110 ଦିନରେ ସବୁଜ ଫଳ 12-15 ଟନ୍/ହେକ୍ଟର।
15	ସଂରକ୍ଷଣ	ଶିମ୍ ତାଜା ଭାବରେ ବ୍ୟବହାର କରିବା ପାଇଁ ବହୁତ ଶୀଘ୍ର ନଷ୍ଟ ହୋଇଯାଏ। ଅମଳ ପରେ ଶୀତଳୀକରଣ କଲେ ଏହାର ଆୟୁ ଜୀବନ 7-8 ଦିନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବୃଦ୍ଧି ପାଇପାରେ।
16	କରନ୍ତୁ ନାହିଁ	
17	କରନ୍ତୁ	
ଟିପ୍ପଣୀ	ଉପରୋକ୍ତ ସୂଚନା ଏକ ସାଧାରଣ ପରାମର୍ଶ ଅଟେ। ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ଅଞ୍ଚଳର ନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ ସୁପାରିଶ ପାଇଁ, ଦୟାକରି ଆପଣଙ୍କ ସ୍ଥାନୀୟ ରାଜ୍ୟ କୃଷି ବିଭାଗ ସହିତ ଯୋଗାଯୋଗ କରନ୍ତୁ।	
ସତର୍କତା	ଫସଲର ବୃଦ୍ଧି ଏବଂ ଅମଳ ବିଭିନ୍ନ କାରଣ ଦ୍ୱାରା ପ୍ରଭାବିତ ହୋଇପାରେ। ତେଣୁ, ପରାମର୍ଶ ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ଥାନୀୟ କୃଷି ଅଧିକାରୀଙ୍କ ସହିତ ପରାମର୍ଶ କରିବାକୁ ସୁପାରିଶ କରାଯାଉଛି। ନିଶ୍ଚିତ କରନ୍ତୁ ଯେ କେବଳ ଉଚ୍ଚମାନର ସାର ଏବଂ କୀଟନାଶକ ବ୍ୟବହାର କରାଯାଉଛି। ବିହନ, ସାର ଏବଂ କୀଟନାଶକ କ୍ରୟ କରିବାର ରସିଦ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ରଖନ୍ତୁ।	

বুশ বিন অনুশীলনৰ পেকেজ

অভিনন্দন! আপুনি ক্রিষ্টেল পৰিয়ালৰ উৎকৃষ্ট বুশ বিনৰ বীজ এটা বাচি লৈছে। উচ্চ মানৰ বুশ বিন বীজ উৎপাদনত ক্রিষ্টেলৰ দৃঢ় অভিজ্ঞতা আছে। এই বীজবোৰ হৈছে বিস্তৃত গৱেষণাৰ ফলাফল, যাৰ লক্ষ্য হৈছে বিভিন্ন কৃষি জলবায়ুৰ বাবে উপযুক্ত উচ্চ-উৎপাদনশীল হাইব্রিড শস্য বিকাশ কৰা। বীজ উৎপাদনৰ সময়ত ক্রিষ্টেলে শেহতীয়া প্রযুক্তি গ্রহণ কৰে যাতে কৃষকসকলে সৰ্বোচ্চ মানৰ বীজ লাভ কৰে। ক্রিষ্টেলৰ বুশ বিনৰ বীজবোৰে জৈৱিক আৰু অজৈৱিক চাপৰ প্রতি সহনশীলতাৰ সৈতে উৎকৃষ্ট অংকুৰণ আৰু উন্নত শক্তি প্রদান কৰে।
অনুগ্রহ কৰি উৎকৃষ্ট কৃষি পদ্ধতি গ্রহণ কৰি উৎকৃষ্ট উৎপাদন লাভ কৰক। তলত দিয়া সাধাৰণ পৰামৰ্শসমূহ প্রদান কৰা হৈছে, গতিকে আমি আপোনাক অনুৰোধ কৰোঁ যে আপুনি কোনো সিদ্ধান্ত লোৱাৰ আগতে এই পৰামৰ্শসমূহ পঢ়ক।

হাইব্রিড বুশ বিন	কুসুমা, ললিতা				
সময়কাল	100-110 দিন				
খাৰিফ	হয়				
ৰাবি	হয়				
বসন্ত	হয়				
জলসিঞ্চনৰ	নেল/ ব'ৰৰেল				

অনুগ্রহ কৰি মন কৰিব যে বতৰ অনুসৰি শস্যৰ বৃদ্ধি আৰু পৰিপক্কতা ভিন্ন হ'ব পাৰে।

ক্রমিক নম্বৰ	সবিশেষ/কার্য্য/অনুশীলন	কার্যৰ বিৱৰণ, প্রতি একৰ ইনপুট
1	অঞ্চলটোৰ উপযোগীতা/কৃষি জলবায়ু অঞ্চল	বুশ বিন ভাৰতবৰ্ষত গোটেই বছৰজুৰি খেতি কৰিব পাৰি, কিন্তু ই মধ্যমীয়া বতৰত ভালকৈ কাম কৰে, সেয়ে অঞ্চলটোৰ ওপৰত নির্ভৰ কৰি ৰাৰিষা (জুলাই-আগষ্ট), শীতকাল (অক্টোবৰ-নৱেম্বৰ), আৰু গ্রীষ্মৰ আৰম্ভণিতে (ফেব্রুৱাৰী-মার্চ) বীজ সিঁচা হয়।
2	ভূমি / মাটি	5.5-6.0 pH পৰিসৰ থকা ভালদৰে পানী নিষ্কাশন কৰা লোমী মাটিৰ প্রয়োজন। ইয়াৰ উত্তম তাপমাত্রা 15- 24°C।
3	ঋতু বীজ সিঁচাৰ/পলোৱাৰ সময়	পাহাৰঃ ফেব্রুৱাৰী-মার্চ, সমভূমিঃ অক্টোবৰ-নৱেম্বৰ
4	বীজৰ হাৰ। বীজ সিঁচা/পলোৱা পদ্ধতি	বীজৰ হাৰ: পাহাৰৰ বাবে প্রায় 80 কেজি/হেক্টৰ আৰু সমভূমিৰ বাবে 50 কেজি /হেক্টৰৰ প্রয়োজন হয়।
5	মূল পথাৰৰ প্রস্তুতি আৰু ৰোপণ	পাহাৰ: মাটি ভালকৈ খান্দি FYM সংযুক্ত কৰক আৰু সুবিধাজনক আকাৰৰ বিছনা গঠন কৰক। সমভূমি: দুৱাৰকৈ খেতি কৰাৰ পিছত, শূংগ আৰু খোজ গঠন কৰক।
6	ব্যৱধান	পাহাৰত, বীজবোৰ (প্রতিটো পাহাৰত 2টা) 30 x 15 ছেঃমিঃ ব্যৱধানত শাৰী বা বিছনাত সিঁচিব লাগে। সমতল অঞ্চলত, বীজবোৰ (2 টা বীজ / পাহাৰ) 45 x 30 ছেঃমিঃৰ ব্যৱধানত শূংগবোৰৰ ফালে সিঁচিব লাগে।
7	বীজ সিঁচাৰ আগতে বীজৰ শোধনীকৰণ	বীজ বীজ সিঁচাৰ 24 ঘণ্টা আগতে ট্রাইক'ডার্মা 4 গ্রাম/কেজি বীজৰ দ্বাৰা শোধন কৰি ভেঁকুৰৰ ৰোগ নিয়ন্ত্রণ কৰিব লাগে।
8	সাৰ আৰু সাৰুৱা পদার্থ	শেহতীয়া খেতিত FYM 25 টন/হেক্টৰ প্রয়োগ কৰক। N 90 আৰু P 125 কেজি/হেক্টৰত এটা ফালে প্রয়োগ কৰিব লাগে
9	জলসিঞ্চনৰ সময়সূচী	বীজ সিঁচাৰ লগে লগে, তৃতীয় দিনা আৰু তাৰ পিছত সপ্তাহত এবাৰ।
10	ঘাঁহ কাটি/আন্তঃ-সংস্কৃতি	বীজ সিঁচাৰ পিছত 20-25 দিন আৰু 40-45 দিন প্রতিবাৰ গছৰ পুলি কাটি দিয়াৰ পিছত শস্যৰ মাটি পুৰি পেলাব লাগে।
11	ক্ষুদ্র পুষ্টি/বৃদ্ধি নিয়ন্ত্রক স্প্রে	
12	কীট-পতংগ আৰু ৰোগ নিয়ন্ত্রণ	থ্রিপছ/এফিডছ: ফ্লোনিকামাইড 50% WG (0.5 গ্রাম/লিটাৰ) বা ফ্লুবেণ্ডাইডামাইড 8.33% + ডেল্টামেথ্রিন 5.56% w/w SC (0.5 মিলি/লিটাৰ) হোৱাইটফ্লাইঃ ইমিডাক্লু'প্রিড 30.5% SC (0.5 মিলি/লিটাৰ) পড ৰোৰাৰ: এমেমেক্টিন বেঞ্জোয়েট 5% SG (০.৫ গ্রাম/ লিটাৰ) বা ক্লু'ৰান্ট্রানিলিপ্রল 18.5% w/w (0.5 মিলি/ লিটাৰ) মোজাইকঃ আক্রান্ত উদ্ভিদবোৰ আঁতৰাই ভেক্টৰ নিয়ন্ত্রণ কৰিবলৈ ইমিডাক্লু'প্রিড 30.5% SC (0.5 মিলি/লিটাৰ) স্প্রে কৰক পাউডাৰী মল্ডিউ: টেবুকোনাজোল 50% + ট্রাইফ্লক্সিষ্ট্র'বিন 25% WG (প্রতি লিটাৰত 0.5ৰ পৰা 1 গ্রাম) এন্থ্রেকন'জ: আক্রান্ত গছ আৰু গুটি আঁতৰাই টেবুক'নাজ'ল 38.39% w/w SC (প্রতি লিটাৰত 1.25 মিলি) স্প্রে কৰিব লাগে। পথাৰত ৰোগ নিয়ন্ত্রণ আৰু ৰোগৰ বিষয়ে অধিক তথ্যৰ বাবে অনুগ্রহ কৰি আপোনাৰ স্থানীয় কৃষি বিষয়াৰ সৈতে যোগাযোগ কৰক।
13	শস্য চপোৱা	60-75 DASত শস্য চপোৱাৰ বাবে পেকেটসমূহ সাজু হ'ব। পলুবোৰ কঠীয়াতলীলৈ দৃঢ় আৰু কোমল হ'ব লাগে, আৰু প্রতি 2ৰ পৰা 4 দিনত এবাৰ কঠীয়াতলী কাটিব লাগে। ভিজা পেকেটবোৰ কাটিবলৈ নিদিব।
14	প্রত্যাশিত ফলন/ একৰ	আদর্শ পৰিস্থিতিত 90ৰ পৰা 110 দিনত 12-15 টন/হেক্টৰ সেউজীয়া গুটি।
15	সংৰক্ষণ	সতেজ উদ্দেশ্যৰ বাবে বনগছ অতি ক্ষয়ীভোগী। শস্য চপোৱাৰ পিছত হিমায়ন কৰিলে ইয়াৰ ৰক্ষণাবেক্ষণ কাল 7-8 দিনলৈ বৃদ্ধি কৰিব পাৰি।
16	নকৰিবা	
17	কৰিবা	
টোকা	ওপৰৰ তথ্যসমূহ সাধাৰণ পৰামর্শৰ বাবেহে দিয়া হৈছে। বিশেষ অঞ্চলৰ সৈতে সম্পর্কিত বিশেষ পৰামর্শৰ বাবে, অনুগ্রহ কৰি আপোনাৰ স্থানীয় ৰাজ্যিক কৃষি বিভাগৰ সৈতে যোগাযোগ কৰক।	
সাৱধানতা	শস্যৰ বৃদ্ধি আৰু উৎপাদন বিভিন্ন কাৰকৰ দ্বাৰা প্রভাৱিত হ'ব পাৰে। সেয়েহে, পৰামর্শৰ বাবে আপোনাৰ স্থানীয় কৃষি বিষয়াৰ সৈতে যোগাযোগ কৰক। নিশ্চিত কৰক যে কেৱল উচ্চ মানৰ সাৰ আৰু কীটনাশক ব্যৱহাৰ কৰা হয়। বীজ, সাৰ আৰু কীটনাশক ঔষধ ক্রয় কৰাৰ বিলবোৰ ৰাখক।	